

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १) हे संजय, कुरुक्षेत्र केमें, मेरे पुत्र एवं पांडव युद्ध के लिए (एकत्र) होकर क्या किया? (१.१)
अ) अर्चना स्थल क्षेत्र ब) युद्धक्षेत्र क) धर्मक्षेत्र ड) चिताक्षेत्र
- २) कौन सा पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता का प्रत्येक रूपसे गुणगान करता है (१.१)
अ) भागवत पुराण ब) गीता माहात्म्य क) विष्णु पुराण ड) ऊपर के कोई नहीं
- ३) गीता हमेंसे सीखनी चाहिए। (१.१)
अ) वृद्धों ब) अनुभवियों क) कृष्ण – भक्तों ड) पंडितों
- ४) संजयके शिष्य थे। (१.१)
अ) द्रोण ब) धृतराष्ट्र क) व्यासदेव ड) कृष्ण
निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए
i) धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे
ii) धृतराष्ट्र के पुत्र धर्म के जानकार थे
iii) पांडव जन्म से ही पवित्र थे
- ५) ऊपर के कौन से वाक्य सत्य है (१.२)
अ) i, ii ब) i, iii क) i ड) सभी
- ६) द्रोणाचार्य कौरवों / दुर्योधन की सेना मेंका पद सँभाले हुए थे। (१.३)
अ) गुरु ब) धनुर्धर क) सेनापती ड) ऊपर में से कोई नहीं
- ७) योग्य चुनाव दीजिए (१.३)
१ द्रौपदी द्रोण के साथ राजनैतिक युद्ध
२ द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र के आचार्य शिक्षक
३ पांडव द्रुपद सुता
४ द्रुपद द्रोणाचार्य के प्रिय शिष्य
- ८) दुर्योधन के अनुसार उसके विजय के पथ में सबसे बड़ी बाधा कौन था? (१.४)
अ) अर्जुन एवं कृष्ण ब) अर्जुन एवं भीम क) भीम एवं कृष्ण ड) सभी पांडव

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ९) दुर्योधन ने द्रोणाचार्य को अपने ओर के महान योद्धाओं में से पहले किसका नाम वर्णित किया ? (१.८)
- अ) भीष्म ब) द्रोणाचार्य क) कर्ण ड) कृपाचार्य
- १०) सही जोड़ी बनाइए (१.८)
- | | |
|---------------|-----------------------|
| अ) अश्वत्थामा | अर्जुन के अर्ध भ्राता |
| ब) कर्ण | कुंती देवी के पतिदेव |
| क) विकर्ण | द्रोणाचार्य के पुत्र |
| ड) पांडु | दुर्योधन के भाई |
- ११) दुर्योधन के अनुसार पांडवों की सेना रक्षक कौन था (१.१०)
- अ) कृष्ण ब) अर्जुन क) भीम ड) युधिष्ठिर
- १२) दुर्योधन अच्छी तरह से जानता था कि वह मरेगा, तो.....के हाथों से ही..... (१.१०)
- अ) अर्जुन ब) भीम क) कृष्ण ड) धृष्टद्युम्न
- १३) दुर्योधन अच्छी तरह से जानते थे की कौरवों की विजय पर आधारित हैं। (१.११)
- अ) भीष्म ब) द्रोणाचार्य क) कृपाचार्य ड) कर्ण
- १४) भीष्म ने दुर्योधन को उत्साह देने का प्रयत्न कियाके द्वारा (१.१२)
- अ) प्रोत्साहपूर्वक वचन से ब) शंख फूँकने
- क) पांडवों को मारने के प्रण ड) उन्हें दिव्य शस्त्र प्रदान करने
- १५) अर्जुन के रथ के अश्व का वर्ण क्या था (१.१४)
- अ) काला ब) श्वेत क) ताम्र ड) नीला
- १६) पांडवों का विजय निश्चित था क्यों कि (१.१४)
- अ) पांडवों के पल में थी
- ब) अर्जुन जैसे श्रेष्ठ की उपस्थिति थी
- क) द्रोण और भीष्म उपस्थित थे
- ड) धनुर्धर उनकी सैनिक संख्या से अधिक थे

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १७) इस श्लोक में किस व्यक्ति को सदा श्री.भगवान के साथ बतलाया जाता है (१.१४)
- अ) लक्ष्मीजी (भाग्य की देवी) ब) अर्जुन
क) सरस्वतीजी (विद्या की देवी) ड) दुर्गाजी
- १८) अर्जुन जिस रथ पर विराजमान थे वह किनके द्वारा दान किया गया था ? (१.१४)
- अ) सूर्यदेव ब) वरुण देव क) अग्नि देव ड) वायुदेव
- १९) सही जोड़ी बनाए (१.१५ – १.१६)
- | | |
|--------------|--------------|
| अ) युधिष्ठिर | अ) पाञ्चजन्य |
| ब) भीम | ब) देवदत्त |
| क) अर्जुन | क) पौण्ड्र |
| ड) श्रीकृष्ण | ड) अनंत विजय |
- २०) भगवान श्रीकृष्ण के नामों को उनके अर्थों के साथ जोड़िए (१.१५)
- | | |
|----------------|---|
| अ) देवकी नंदन | अ) अर्जुन के सारथी |
| ब) ऋषिकेश | ब) गो एवं इंद्रियों को आनंद देनेवाला |
| क) पार्थ सारथी | क) जिन्होंने देवकी को अपने माता के रूप में स्वीकारा |
| ड) गोविंदा | ड) इंद्रियों के स्वामी |
- २१) सही जोड़ी बनाइए (१.१५)
- | | |
|--------------|------------|
| अ) कृष्ण | अ) धर्मराज |
| ब) युधिष्ठिर | ब) वृकोदर |
| क) अर्जुन | क) मधुसूदन |
| ड) भीम | ड) धनंजय |
- २२) १.२१ श्लोक में युद्ध के लिए किसे जिम्मेदार माना गया है (१.२१)
- अ) द्रौपदी ब) जरासंध क) धृतराष्ट्र ड) दुर्योधन
- २३) किसने धृतराष्ट्र को बताया कि उनकी कौरवों को सत्ता देने की योजना सराहनीय नहीं है ?
- अ) संजय ब) विदूर क) गांधारी ड) श्रीकृष्ण

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २४) भ.ग. १.१९ में सबसे बड़े संकट में किसकी शरण लेने का उपदेश दिया गया है (१.१९)
अ) सैन्य ब) माता-पिता क) राजनेता ड) श्रीकृष्ण
- २५) अर्जुन के रथ पर किसका चिन्ह था (१.२०)
अ) बलराम ब) श्रीकृष्ण क) हनुमान ड) शिव
- २६) अर्जुन कोकी मौजूदगी के कारण कोई चिंता का कारण न था.....
अ) कृष्ण , भीम एवं युधिष्ठिर ब) कृष्ण , हनुमान एवं भीम
क) राम , सीता एवं लक्ष्मण ड) कृष्ण, लक्ष्मीजी एवं हनुमानजी
- २७) कृष्ण को यहाँ अच्युत कहा गया है क्योंकि (१.२१.१.२२)
अ) उन्होंने कभी श्री अश्व को नहीं छोड़ा
ब) वे हमेशा सही कार्य करते थे
क) वे हमेशा कार्य को सही करते थे
ड) वे कभी भी भक्तों के प्रति अपनी कृपा/वात्सल्य दिखाने में नहीं चूकते
- २८) अर्जुन को किस्स की हठता के कारण युद्ध करना पड़ा (१.२१.१.२२)
अ) भीम ब) दुर्योधन क) कर्ण ड) धृतराष्ट्र
- २९) अर्जुन क्यों कौरवों की सेना को देखना चाहते थे (१.२१.१.२२)
अ) उनकी शक्ति मापने के लिए
ब) यह देखने के लिए कि वे युद्ध करने के लिए कितने आतुर हुए हैं
क) कुरुओं से क्षमा याचना करने के लिए
ड) भीष्मदेव से आशिर्वाद प्राप्त करने के लिए
- ३०) रिक्त स्थानों की पूर्ती किजिए (१.२१.१.२२)
अ) कृष्ण सदैव ही अपनेकी सेवा करने के लिए उत्सुक रहते हैं
ब) वास्तव में अर्जुन कभी भी अपने संबंधियों के साथ युद्ध नहीं करना चाहते थे क्योंकि वे एकथे।
क) अर्जुन अपनी विजय के लिए आस्वस्थ थे क्योंकिउनकी ओर थे।
ड) गुडाकेशका दूसरा नाम है। (१.२४)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३२) गुडाकेश का अर्थ क्या है (१.२४)
 अ) जिनके केश काले हैं
 ब) जिनका वर्ण काला है
 क) जिनकी वाणी गुड केश समान मीठी है
 ड) जिसने निद्रा पर विजय प्राप्त कर ली है
- ३३) श्रीकृष्ण के भक्त कभी भी..... से मुक्त नहीं है (१.२४)
 अ) क्लेश ब) सुख क) कृष्ण – स्मरण ड) शक्ति, नाम
- ३४) किस प्रकार से श्रीकृष्ण के भक्त निद्रा एवं आलस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं (१.२४)
 अ) श्रीकृष्ण का सतत स्मरण करने से ब) वैदिक ज्ञान को पढ़ने से
 क) योगासन करने से ड) श्लोक का रोज पाठ करने से
- ३५) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (१.२४)
 अ) कृष्ण भावनामृत का अर्थ है सतत हीकी चेतना/भावना में रहना ।
 ब) भक्त की प्रकृति वही है कि वह कभी भी.....को नहीं भूलता ।
 क)एवंको परिवार के वरिष्ठ सदस्यों से रक्षा मिलनी चाहिए (१.४०)
 ड) पाप विमोचन की प्रक्रिया कोकहा जाता है ।(१.४१)
- ३६) श्रीकृष्ण भगवान को अर्जुन के द्वारा रथ को बीच में स्थित करना समझते थे क्योंकि वे.....है (भ.ग. १.२४)
 अ) मधुसुदन ब) मदनमोहन क) हृषिकेश ड) पार्थसारथी
- ३७) कृष्ण यह समझ सकते थे कि अर्जुन के हृदय में क्या हो रहा था क्योंकि (१.२५)
 अ) वे सभी के हृदय में परमात्मा है ब) वे महान रौन्द्र जालक है
 क) वे अर्जुन के प्रिय मित्र थे ड) वे अर्जुन के मुख को पढ़ सकते थे
- ३८) इस श्लोकानुसार श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बनने को, तैयार थे क्यों की
 अ) कृष्ण अर्जुन के सखा थे
 ब) कृष्ण परम भगवान है
 क) अर्जुन पृथा के पुत्र है, जो उनके पिता वसुदेव की बहन है
 ड) अर्जुन ने उनको विनंती की

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३९) जोडी बनाए अर्जुन के संबंध में (भ.ग. २.२९)
- अ) भीष्म मित्र
 ब) द्रोणाचार्य पितामह
 क) शल्य भाई
 ड) दुर्योधन आचार्य
 ग) अश्वत्थामा मामा
- ४०) अपने मित्रों और बंधुओं को शत्रु की ओर देख अर्जुन को क्या भाव आया ? (१.२७)
- अ) ईर्ष्या ब) द्वेष क) करुणा ड) उन सब को मार डालने की
- ४१) अर्जुन ने शत्रुओं की सेना को देखकर कौनसे लक्षण दिखाए (१.२८)
- अ) युद्ध में हार से डर कर काँप रहे थे।
 ब) भीष्म को दुसरी ओर देखा निराश थे।
 क) उनके अंग काँपने लगे और मुँह सूखने लग गया करुणावश
 ड) वे उन सब को मारने के लिए अशांत हो गए
- ४२) श्री.भगवान का शुद्ध भक्त.....गुणों को विकसित करता है (१.२८)
- अ) सभी अच्छे ब) सभी जीवों के प्रति प्रेम के
 क) सभी के लिए करुणा के ख) सभी
- ४४) सत्य / असत्य
- अ) अर्जुन एक कमजोर हृदय के व्यक्ति थे क्यों कि शत्रुओं की सेना देखकर उनका शरीर काँपने लग गया और मुँह सूख गया (१.२) (सत्य / असत्य)
 ब) दिव्य अनुभूति में कोई भय नहीं है (१.२०)
 क) एकहमलावर शत्रु को मारना बड़ा पाप है (१.३)
- ४५) एक व्यक्ति का शरीर काँपने लगता है एवं उनके केश खड़े हो जाते हैं (१.२९)
- अ) आध्यत्मिक आनंद में ब) कोई भौतिक स्थिति के भय से
 क) दोनों ड) कोई नहीं

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४६) अर्जुन के धनुष का नाम क्या है? (१.३०)
अ) अनंत विजय ब) सुघोषण क) मणिपुष्पक ड) गांडीव
- ४७) अर्जुन डर रहे थे
अ) संपत्ती के नुकसान से ब) युद्ध क्षेत्र में हार से
क) जान माल के नुकसान से ड) सैन्य खोने के डर से
- ४८) अर्जुन का भय स्पष्ट था.....जैसे लक्ष्मणों से (भ.ग.१.२९)
अ) धनुष हाथ से फिसलने से ब) रौंगटे खड़े होना
क) त्वचा के जलने के अनुभव से ड) सभी
- ४९) अर्जुन युद्धस्थल में नहीं रह पा रहे थे और वे अपने आप को भूल रहे थे क्योंकि(१.३०)
अ) वे एक आत्मसाक्षात्कारी नहीं थे ब) कुरू की सेना से डर रहे थे
क) मन की दुर्बलता की वजह से ड) उनहे संन्यास लेने की इच्छा थी
- ५०) व्यक्ति को भ्रमपूर्ण स्थिति में रखा जाता है , जब (१.३०)
अ) वह भौतिक वस्तुओं से आसक्त है
ब) वह अपने ध्यान की शक्ति खो देता है
क) वह अपने धन को खो देता है
ड) उनके नाम ,ख्याती दावे पर है
- ५१) भौतिकता से आसक्त व्यक्तियों के क्या दो गुण हैं ? (१.३०)
अ) भय ब) मानसिक समत्व का खोना
क) बहुत ही महत्वाकांक्षी बनना ड) सफलता प्राप्ति के लिए दृढ़ बनना
- ५२) जब व्यक्ति को मात्र दुख / निराशा ही प्राप्त होती है वह क्या सोचता है (१.३०)
अ) आत्महत्या ब) और ज्यादा परिश्रम करूँ
क) मैं यहाँ क्यों हूँ ड) चोरी के द्वारा धन को क्यों न कमाऊँ ?

भगवद्गीता प्रश्नावली

- 43) अर्जुन भगवान के शुद्ध भक्त होनेके पश्चात भी ऐसी अज्ञानता दिखा रहे थे क्योंकि.....(१.३०)
- अ) कृष्ण की इच्छा थी
- ब) उन्हें अपने पारिवारिक जीवन का आनंद भोगना था
- क) उन्हें एक व्यक्ति के मारने के पाप से डर था
- ड) वे अपने रिश्तेदारों से आसक्त थे
- 44) एक व्यक्ति भौतिक दुख अनुभव करता है क्योंकि वह भूल जाता है ? (१.३०)
- अ) सफलता परिश्रम से ही मिलती है ब) अधिक धन से अधिक सुख मिलेगा
- क) अपना स्वार्थ कृष्ण में ही हैं ड) पारिवारिक सदस्य ही सुख दे सकते हैं
- 45) इस श्लोक (भ.ग. १.३२) के अनुसार किस प्रकार के व्यक्ति सूर्य प्रवेश कर सकते हैं ?
- अ) योगसिद्धि से पूर्ण
- ब) कृष्ण के आज्ञानुसार युद्धभूमि में वीर गति को प्राप्त होता है
- क) संन्यासी
- ड) मायावादी
- 46) अर्जुन युद्धस्थल से भागनेका निर्णय क्यों लिया (१.२२)
- अ) एक सुखी पारिवारिक जीवन जीने के लिए
- ब) कोई और जगह रोजगारी वृत्ति ढूँढने के लिए
- क) वन जाकर एक प्रशांत स्थल में रहने के लिए
- ड) दुर्योधन को उनके सेवक के रूप में सेवा करने
- 47) क्षत्रिय होने के कारण अर्जुन को अपने गुजारे के लिए चाहिए था (१.३२)
- अ) गाय ब) जमीन (खेती के लिए)
- क) राज्य (परिपालन के लिए) ड) एक व्यापार (धन प्राप्ति के लिए)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ५८) अर्जुन ने श्रीकृष्ण को यहाँ (१.३२.३५) गोविंद कहाँ है
क्योंकि वे कृष्ण को समझना चाहते थे की ,.....(१.३२.३५)
अ) कि वे कौरवों के प्रति करुणामयी है
ब) वे गौवों तथा इंद्रियों की प्रसन्नता के विषय है
क) कि वह अपने गुरुजन का आदर करता है और उन्हें मारना नहीं चाहता
ड) कि उनके वन जाने का निर्णय सही है
- ५९) हम अपने इंद्रियों को कैसे संतुष्ट कर सकते हैं (१.३२.३५)
अ) गोविंद को तुष्ट करके ब) और धन प्राप्त करके
क) स्वादिष्ट अन्न को प्राप्त करके ड) बहुत मेहनत करके
- ६०) अर्जुन ने यहाँ कृष्ण को माधव कहा क्योंकि (१.३६)
अ) वे कृष्ण को उन्हें मारने के लिए प्रेरित कर दुर्भाग्य नहीं लाना चाहते थे
ब) वे चाहते थे की कृष्ण उन्हें धन दे
क) वे चाहते थे कि कृष्ण उन्हें धृतराष्ट्र से बड़ा राज्य दे
- ६१) भौतिकता से सभी अपना ऐश्वर्यको बताना नहीं चाहते हैं
अ) उनके मित्र एवं संबंधि ब) भगवान क) दरिद्रजन ड) चोर
- ६२) विजय के पश्चात अर्जुन अपने ऐश्वर्य किसके साथ बाँटना चाहते थे
(१.३२.१.३५)
अ) किसी के साथ भी नहीं ब) अपने सभी परिवार जनों के साथ
क) पूरे दुनिया के साथ ड) मात्र कृष्ण के साथ
- ६३) इस श्लोक(१.३२.३४)में एक भक्त किस कारण वश ऐश्वर्य
को स्वीकार करते हैं
अ) दरिद्र जन को बाँटने के लिए ब) श्री भगवान की सेवा में लगाने के लिए
क) अपने परिवार जनों को बताने के लिए ड) अपने गुजारे के लिए

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ६४) यदि कोई आवश्यकता हो , तो अर्जुन कीन के द्वारा मारना चाहते थे
कि वे उनके रिश्तेदारों को मारे (१.३२.१.३५)
अ) भीम ब) अभिमन्यू क) कृष्ण ड) द्रोणाचार्य
- ६५) इस श्लोक (१.३२.१.३५) के अनुसार युद्ध के प्रारंभ से ही सभी कुरूओं
को.....ने मार दिया था।
अ) भीष्म ब) कृष्ण क) कृपाचार्य ड) युधिष्ठिर
- ६६) निम्नलिखित स्थितियों में से कौन सी परिस्थिति को श्री भगवान कभी भी
सहन नहीं कर सकते (१.३२ १.३५)
अ) उनकी कोई भक्ति न करें
ब) निरीश्वरवादियों को
क) जो उनको धन एवं अन्न भोग न लगाता हो
ड) उनके भक्तों के प्रति गलत कार्य करने वालों को
- ६७) वैदिक आदेशानुसारप्रकार के हमलावर / शत्रु होते हैं(१.३६)
अ) ४ ब) ५ क) ६ ड) ७
- ६८) निम्नलिखित में से किसे आततायी कहा जा सकता है (१.३६)
अ) युद्धस्थल पर जो लड़ता है और मरता है
ब) जो दूसरे की जमीन पर कब्जा करता है
क) जो युद्धस्थल से दौड़कर भाग जाता है
ड) जो उनके स्त्री को हरण करता है
- ६९) आज भी सब.....के राज्य में रहना चाहते हैं (१.३६)
अ) पृथु महाराज ब) युधिष्ठिर क) रामचंद्र ड) मौर्य
- ७०) अर्जुन ने श्रीकृष्ण को भाग्य की देवी के पती (माधव) कहकर संबोधित किया
क्योंकि(१.३६)
अ) वह कृष्ण के द्वारा उत्प्रेरित हो के वध नहीं करना चाहते और दुर्भाग्य
को आमंत्रित नहीं करना चाहते
ब) वह कृष्ण से सारा संपत्ति (सौभाग्य) प्राप्त करना चाहता था

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) वह कृष्ण द्वारा धृतराष्ट्र से भी बड़ा राज्य प्राप्त करना चाहता था।
ड) कोई भी नहीं

- ७१) शास्त्र के निर्देशन के (हिसाब से) मुताबिक अर्जुन युद्ध करने के लिए इन्कार नहीं कर सका। क्यों (१.३७.३८)
अ) क्योंकि वह दुर्योधन द्वारा ललकारा गया था।
ब) क्योंकि वह किसी भी हाल में राज्य प्राप्त करना चाहता था।
क) क्योंकि वह कुरु के द्वारा किए गए छल का बदला लेना चाहता था।
ड) क्योंकि वह पत्नी वस्त्र हरण का बदला लेना चाहता था।
- ७२) परिवार के वृद्ध व्यक्ति की हत्या क्यों नहीं की जा सकती (१.३९)
अ) कारणवश वे परिवार के आय स्रोत के कारण हैं
ब) परिवार को एकत्र रखते हैं
क) परिवार में पवित्रता स्थापित करने वाले होते हैं
ड) कुछ भी नहीं
- ७३) शुद्धिकरण के लिए कुल का रिवाज बंद होने पर कुल के युवा सदस्य पर क्या असर पड़ता है ? (१.३९)
अ) वे लोग अधार्मिक आचरण ग्रहण कर लेते हैं
ब) वे लोग अल्प आयु में ही श्रम करने धन अर्जन करने में जुड़ जाते हैं
क) वे लोग आधुनिक बन जाते हैं
ड) मनमानी धर्म का आचरण करते हैं
- ७४) भगवद् गीता १.४० के अनुसार मानव समाज में शांति समृद्धि और धार्मिक उन्नति का प्रमुख सिद्धांत क्या है
अ) अच्छा आर्थिक विकास ब) अच्छी संतान
क) भयमुक्त सेना ड) अधिक जनसंख्या
- ७५) भगवान विष्णु को अर्पित किया गया भोजन ग्रहण करने से व्यक्ति को क्या फल मिलता है ? (१.४१)
अ) उसको कभी भूख नहीं लगता
ब) हर प्रकार के पापों से मुक्ति मिलता जाती है
क) कुछ भी नहीं ड) दोनों
- ७६) अपने पूर्वजों की भुतप्रेत की योनी या कष्टमय अवस्था से किस प्रकार मुक्त किया जा सकता है ? (१.४१)
अ) उनको भगवान का प्रसाद खिलाकर

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ब) उनके संतुष्टि के लिए यज्ञ आदि करके
क) जब वह दूसरा शरीर धारण करें
ड) जब पूर्वज खुद से भगवन विष्णु को भोग लगाए
- ७७) कौन सी साधारण प्रक्रिया के माध्यम से हजारों पूर्वजों का उद्धार किया जा सकता है (१.४१)
अ) भक्ति करने से ब) सौ अश्वमेध यज्ञ करके
क) प्रतिदिन दान प्रदान करके ड) यह कार्य संभव नहीं है
- ७८) मुकुन्द का अर्थ क्या होता है ? (१.४१)
अ) सुख प्रदायक ब) सुंदरता प्रदायक क) मोक्ष प्रदाता ड) यश प्रदाता
- ७९) इस श्लोक के मुताबिक कौन सा व्यक्ति सभी प्रकार के देवी-देवता, मानवता परिवार आदि के प्रांत किया जानेवाला कर्म बंधन और ऋण से मुक्ति प्राप्त कर सकता है (१.४१)
अ) वह जिसने पुण्य/ पवित्र क्रिया कलाप नहीं किया है
ब) वे जो भगवान मुकुन्द के चरण कमल ग्रहण कर लेता है
क) वे जो हर चीज का परित्याग करता है और ध्यान करने को वन जाता है
ड) जो योगसिद्धि प्राप्त करता है
- ८०) वर्णाश्रम धर्म का अभिप्राय क्या है (१.४२)
अ) मानव मात्र को मुक्ति दिलाना
ब) एक राजा को राज्य करने के लिए सरलता प्रदान करना
क) उच्च और निम्न कोटी वर्ग के बीच भिन्नता रखने के लिए
ड) कुछ भी नहीं
- ८१) किनके द्वारा सनातन धर्म का अवहेलना करने से समाज में असंमजस / कोलाहल होता है ? (१.४२)
अ) युवा पीढ़ियों से ब) वयोवृद्ध के द्वारा क) नेतृओं द्वारा ड) शुद्र के द्वारा
- ८२) सनातन धर्म को भुलाने पर आदमी क्या भूल जाता है (१.४२)
अ) विष्णु ब) सघे संबंधी क) धन अर्जन का लक्ष्य ड) प्रतिष्ठा प्राप्ति का लक्ष्य
- ८३) वर्णाश्रम धर्म में कितने प्रकार के विभाजन होते हैं (१.४२)
अ) ४ ब) ५ क) ६ ड) ७

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ८४) कौनसा प्राणी वास्तविक ज्ञान का सच्चा अर्थ प्राप्त करने का सही अधिकारी है (१.४३)
- अ) कोई मित्र जो हमे सभी प्रकार से जानता हो
ब) समाज जहाँ हम रहते है
क) सही व्यक्ति जिसे वह ज्ञान पहले से ही प्राप्त हो
ड) माता-पिता जिनको हमारे लिए अधिक प्रेम हो
- ८५) जो नेता सनातन धर्म का पालन नहीं करते उन्हें क्या माना जाता है (१.४२)?
- अ) अत्याधुनिक
क) बहरा/श्रवण शक्तिहीन
ब) अंधा/दृष्टहीन
ड) बोल न पाता हो/गूँगा
- ८६) ज्ञान प्राप्त करने का सही मार्ग क्या है (१.४३)
- अ) शास्त्रों का अध्ययन करना
क) आचार्यों के मुखसे सुनना
ब) ध्यान करना
ड) खुद का मानसिक विचार
- ८७) कुर्म का प्रभाव क्या होता है (१.४३)
- अ) आनंदमय जीवन प्राप्त होता है
क) नर्किय जीवन मिलता है
ब) धन का अभाव नहीं पड़ता है
ड) अधिक नाम, यश और प्रसिद्धी प्राप्त होता है
- ८८) व्यक्ति स्वार्थ के प्रभाव से कुर्म करता है (१.४४)
- अ) सही
ब) गलत
- ८९) क्षत्रिय सिद्धांत के मुताबिक अस्त्र शस्त्रहीन शत्रु को वध किया जा सकता है (१.४५)
- अ) सही
ब) गलत
- ९०) कोमल हृदय वाले व्यक्ति भक्ति भाव नहीं कर सकते (१.४६)
- अ) सही
ब) गलत
- ९१) अर्जुन रथ पे बैठ गया (१.४६) क्योंकि
- अ) वह थक गए थे
ब) वह आराम करना चाहते थे
क) वह भगवान श्रीकृष्ण का चरण कमल ग्रहण करना चाहते थे

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) वह पश्चाताप से प्रभावित थे
अध्याय भाग २
- ९२) राजनीति और समाज शास्त्र से भी महत्वपूर्ण और क्या है ?(२.१)
अ) धार्मिक सिद्धांत ब) आत्मा और परमात्मा
क) शरीर को देखभाल ड) पढाई
- ९३) बुद्धिमान व्यक्ति विलाप नहीं करताऔर..... के लिए(२.२)
अ) जीवित और मृत ब) धन और स्त्री क) सुख और दुख ड) सब सही है
- ९४) उपनिषद् में परमपिता भगवान श्रीकृष्ण के बारे में क्या वर्णन है (२.२)
अ) वे संहारक हैं ब) वे जन्म दाता हैं क) वे पालनहार हैं ड) ऊपर के सभी
- ९५) भगवान श्रीकृष्ण के वचन को आधिकारिक माना जाता है क्यों कि ?
अ) कृष्ण एकजीव हैं ब) कृष्ण पर माया का प्रभाव नहीं पड़ता है
क) कृष्ण प्रभू हैं ड) कृष्ण शास्त्र के मुताबिक बताते हैं
- ९६) प्रत्येक आत्मा कब शरीर परिवर्तन करती है (२.१३)
अ) मृत्यु ब) जब वृद्ध हो तब क) जब पैसा/ रक्कम प्रमाण समाप्त हो तब
ड) जब कर्म समाप्त हो तब
- ९७) इस तात्पर्य में अर्जुन किन दो व्यक्ति के लिए चिंतित था (२.४)
अ) युधिष्ठिर महाराज और भीम ब) भीष्म और द्रोण
क) दुर्योधन और धृतराष्ट्र ड) नकुल और सहदेव
- ९८) अस्थायी रूप से प्रकट और अप्रकट होनेवाला हर्ष और शोक
किस प्रकार होता है (२.१४)
अ) शीत और ग्रीष्म (सर्दी और गर्मी)मौसम के तरह प्रकट –अप्रकट
ब) परीक्षा और प्रतिफल की प्रकट और अप्रकट की तरह
क) सही और गलत की प्रकट और अप्रकट की तरह
ड) इस में से कोई एक

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १९) युद्ध करना किस का धार्मिक सिद्धांत है (२.१४)
 अ) ब्राम्हण ब) क्षत्रीय क) वैश्य ड) शुद्र
- १००) भगवान श्री चैतन्य कोन सी उमर में संन्यास ग्रहण की (२.१५)
 अ) २५ ब) २७क) २४ ड) २६
- १०१) स्थायी रूप से कौनसा चीज व्याप्त रहता है (२.१६)
 अ) शरीर ब) मन क) ज्ञान / बुद्धि ड) आत्मा
- १०२) वह कौनसी अविनाशी चीज है जो सारे शरीर में अवस्थित (व्याप्त) है (२.१७)
 अ) चेतना ब) रक्त क) पाणी ड) आत्मा
- १०३) आत्माको किस वस्तु के उच्च भाग के (अग्रभाग) १/१०००० भाग से तुलना / वर्णित किया जाता है (२.१७)
 अ) नाक ब) हाथ क) केश / बाल ड) कपार / मस्तिष्क
- १०४) क्या हम किसी प्रकार के शस्त्र से आत्मा का वध कर सकते हैं (२.१९)
 अ) हाँ ब) नहीं क) दोनो गलत है ड) दोनो सही है
- १०५) जीवीत प्राणी किसके आधीन माना जाता है
 अ) मन ब) राष्ट्र क) परम भगवान ड) सब कुछ
- १०६) आत्मा के २ प्रकार कौनसे हैं
 अ) अणू आत्मा और प्रभू आत्मा ब) अणू आत्मा और विभू आत्मा
 क) आत्मा और परमात्मा ड) ऊपरे के सभी
- १०७) शरीर कितने प्रकार के रूपांतर / बदलाव से संबंधित है (२.२०)
 अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) छह
- १०८) आत्मा के लक्षण क्या है (२.२०)
 अ) शरीर ब) विकास क) श्वास-प्रश्वास ड) चेतना
- १०९) प्रत्येक वस्तु का सही उपयोग होता है और मनुष्य जो अवस्थित होता है वह जानता है (२.२१)
 अ) संपूर्ण ज्ञानमें ब) ध्यान में क) समाधी में ड) उपर का सब
- ११०) शल्य क्रिया मरीज को मारने के लिए नहीं बल्कि उनके निरोगी / स्वास्थ्य बनाने के लिए है इसलिए (अंतः) अर्जुन द्वारा युद्ध रूपी कर्म भगवान श्रीकृष्ण के आज्ञा के मुताबिक पूर्ण ज्ञान में होना चाहिए जिसमें पाप कर्मों के

भगवद्गीता प्रश्नावली

- फल के प्रभाव (पाप फल) की संभावना नहीं है। (२.२१.)
अ) सही ब) गलत क) दोनो सही ड) दोनो गलत
- १११) जिस प्रकार से एक मित्र दुसरो की इच्छा पूरी करता है उसी प्रकार आत्मा की इच्छा पूरी करते हैं (२.२२)
अ) धन ब) मन क) परमात्मा ड) पिता
- ११२) जो व्यक्ति युद्ध स्थल में शरीर का त्याग करता है वो एक्बार में ही शरीर के दुष्कर्म के प्रभाव से मुक्त हो जाता है और उच्च अवस्था को प्राप्त करता है। (२.२२)
अ) सही ब) गलत क) आधा सही ड) कुछ भी नहीं
- ११३) आधुनिक युग के (न्युक्लियर अस्त्र) परमाणु अस्त्र अस्त्र के रूपमें विभाजित है (२.२३)
अ) भूमि ब) अग्नि क) वायु ड) पानी (जल)
- ११४) “सर्वगत” का अर्थ क्या है (२.२४)
अ) सर्वत्र ब) सर्वत्र विद्यमान क) कहीं भी ड) कुछ भी नहीं
- ११५) जहाँ तक आत्मा के अस्तित्व का संबंध है, कोई भी इसके अस्तित्व की पुष्टि प्रमाण के अतिरिक्त किसी प्रयोग द्वारा नहीं कर सकता है (२.२५)
अ) श्रुती ब) स्मृती क) दृष्टि ड) (कर्म)
- ११६) परमात्मा है और अणु आत्मा है (२.२५)
अ) अनंत, अति सूक्ष्म ब) अतिसूक्ष्म, अनंत
क) अनंत, अनंत ड) अतिसूक्ष्म, अतिसूक्ष्म
- ११७) आत्मा के लिए किसी काल में और ना होता है का वध होने पर भी आत्मा का वध नहीं होता। (२.२०)
अ) जन्म, मृत्यु, शरीर ब) सुख, दुख, जीवन
क) गरम, शरद, ज्ञानेन्द्रिय ड) नुक्सान, लाभ, शरीर
- ११८) भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध को आज्ञा देते हैं, फिर भी इस प्रकार का द्वंद्व जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित हो तो उसे द्वंद्व नहीं कहा जाता क्यों? (२.२१)
अ) क्योंकि वह सिर्फ शत्रु के विरुद्ध ही युद्ध कर रहा है
ब) क्योंकि वह आत्मा का वध नहीं किया जा सकता है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) अर्जुन के द्वारा किया गया द्वंद्व न्याय प्रशासका के लिए भगवान कृष्ण के आज्ञा के मुताबिक था
- ११९) ड) क्योंकि उसको बदला लेना था
भगवत गीता में आत्माद्वारा नया शरीर धारण जैसी बात किस प्रकार के दृष्टान्त द्वारा बताया गया है (२.२२)
अ) शरीर बचपन से जवानी और फिर बुढ़ापे में बदलता है
ब) जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्र त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता है
क) जो सारा शरीर में व्यक्त रहता है, वह अखंडणीय है
ड) कुछ भी नहीं.
- १२०) भगवद्गीता यथारूप के द्वितीय अध्याय में आत्मा को कौनसे चार लक्षण का वर्णन नहीं है (२.२३)
अ) आत्मा किसी भी शस्त्र द्वारा खंडित नहीं किया जा सकता है
ब) आत्मा अग्नि द्वारा जलाया नहीं जा सकता है
क) जल के माध्यम से भी भिगोया नहीं जा सकता है
ड) आत्मा इस प्रत्यक्ष दृष्टि द्वारा नहीं देखा जा सकता है
- १२१) “सर्वगत” शब्द का अर्थ क्या है (२.२४)
अ) जीवित प्राणी भगवान के सृष्टि पर निर्भरित है
ब) जीवित प्राणी पूर्ण ज्ञान में है
क) जीवित प्राणी प्रत्येक अवस्था में सुखी है
ड) जीवित प्राणी सूर्यग्रहण पर रहता है
- १२२) यह दृष्टान्त तात्पर्य २.२५ में कौनसी व्यक्तव्य के लिए है (२.२५)
“कोई भी अपनी माता के आधार पर अपने पिता के अस्तित्व को अस्वीकार नहीं कर सकता” (२.२५)
अ) सच की खोज का महत्व
ब) वैदों के अध्ययन के बिना आत्मा को जानने का अन्य कोई साधन नहीं है
क) हमे अधिकारी पर विश्वास करना चाहिए ड) कुछ भी नहीं
- १२३) यद्यपि अर्जुन को आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं था, फिर भी उसे पश्चाताप करने का कोई कारण नहीं था, क्यों? (२.२६)
अ) यदि आत्मा का अस्तित्व नहीं है इसका अर्थ शरीर भौतिक तथा रसायनिक पदार्थों से बना है और कोई भी मानव थोड़ेसे रसायनों की क्षति के लिए शोक नहीं करता तथा अपना कर्तव्य पालन नहीं त्यागता है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ब) उसे कर्म फलों के नियम की चिन्ता नहीं करना है
- क) उसे अपने इष्टमित्रों के लुप्त होनेपर रोने की आवश्यकता नहीं है
- ड) पश्चाताप करके उसे युद्ध में विजय प्राप्त नहीं होगा
- १२४) यदि अर्जुन अपने को दिए गए कर्तव्य का पालन का परित्याग करता है तो क्या परिणाम होगा (२.२७)
- अ) वह युद्ध का त्याग कर सकते हैं
- ब) वह अपने सद्या संबंधियों को मरने से बचा सकते हैं
- क) वह गलत कर्म का रास्ता (अनुचित कर्तव्यपथ) चुनने के कारण निच बन जाएंगे
- ड) वह इससे भी कुछ अच्छा कर्म करने की विकल्प देख सकते हैं
- १२५) वैदिक ज्ञान आत्मसाक्षात्कार काक । अस्तित्व के आधार पर प्रोत्साहन नहीं देता है । (२.२८)
- अ) भौतिक शरीर ब) आत्मा क) भौतिक संसार ड) आभिमान
- १२६) यद्यपी यह ज्ञान के परम प्रमाण अधिकारी भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा बताया गया है, परंतु हर व्यक्ति इस प्रत्येक अणु आत्मा के तेज को नहीं समझ सकते जो (२.२९)
- अ) व्यक्ति अल्पज्ञ अज्ञानी हो ब) भगवद् गीता अध्ययन नहीं करता
- क) कोई भी नहीं समझ सकता ड) कुछ भी नहीं,
- १२७) सही रूप में आवश्यकता होने पर हिंसा की आवश्यकता को न्यायोचित ढंग से देखना पड़ता है (२.३०)
- अ) जब भगवान की स्वीकृति हो तब
- ब) अपनी अवस्था का विचार करते हुए
- क) हमे अपने बदला लेने की जागरूकता हो
- ड) कुछ भी नहीं
- १२८) क्षत्रिय का मतलब है (२.३१)
- अ) जो युद्ध करता है
- ब) जो विभिन्न अस्त्र शस्त्र का ज्ञान रखता है
- क) जो गलत परिस्थिति में रक्षा करता है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) जो बड़ों की आज्ञा का पालन करता है
- १२९) क्षत्रियो को सही अवस्था आने पर हिंसा का प्रयोग करना पड़ता है क्योंकि (२.३२)
- अ) उसकी प्राकृतिक अवस्था ही युद्ध करने की है
- ब) उसका धर्म है अपने प्रजा की हर प्रकार की कठिनाई से रक्षा करे
- क) उसका धर्म है की अपने शत्रुओंको निचे करे
- ड) कुछ भी नहीं
- १३०) भागवत गीताके मुताबिक, अर्जुन के कौनसे कार्य उसको नर्क में लेके जायेगा (२.३३)
- अ) युद्ध
- ब) युद्ध से पिछे हटना
- क) अपने सगे संबंधियोंको मारना
- ड) द्वंद पैदा करना
- १३१) भगवान् क अर्जुन के लिए अंतिम निष्कर्ष (फैसला) था (२.३४)
- अ) युद्ध मे मारे जाओ और पीछे मत हटो
- ब) साधु बन जाओ
- क) युद्ध छोड़ो
- ड) युद्ध जीत लो
- १३२) युद्ध मे उपस्थित महारथी क्या सोचेंगे यदि अर्जुन युद्ध ना करने का निर्णय लेता है (२.३५)
- अ) अर्जुन सब की भलाई के लिए सोचता है
- ब) भय के कारण अर्जुन ने युद्ध परित्यागा
- क) उसे अपने सखे संबंधियों से अधिक प्रेम है
- ड) कुछ भी नहीं
- १३३) यदि अर्जुन युद्ध में मारा जाता है तो वह स्वर्गलोक की प्राप्ति करेगा (२.३७)
- अ) सही
- ब) गलत
- १३४) भगवत गीता के मुताबिक , अच्छा और बुरा कर्म का प्रभाव की भागी कौन बनेगा (२.३८)
- अ) जो काम करता है
- ब) जो अपनी इंद्रतृप्ति करता है
- क) जो तपस्या नहीं करता है
- ड) प्रत्येक व्यक्ति इसका भागी बनेगा

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १३५) अर्जुन का युद्ध न करने का प्रस्ताव किसपर आधारित था
अ) इंद्रिय तृप्ति ब) दया क) कमजोर हृदय ड) भय
- १३६) भौतिक गाव में और कृष्णभावनाभावित भाव में किया जानेवाला काम में क्या अंतर (भिन्नता) है (२.४१)
अ) कृष्णभावनाभावित होकर किया जानेवाला कर्म स्थायी होता है पर भौतिक भाववाला कर्म मिट जाता है
ब) कृष्णभावना भावित होकर किया जानेवाला कर्म अच्छा फल देता है पर भौतिक कर्म नहीं
क) कृष्णभावना भावित होकर कर्म भौतिक फल भी देता है लेकिन भौतिक भावा वाला कर्म नहीं
ड) कुछ भी नहीं
- १३७) समाधि कौन प्राप्त नहीं कर सकता है (२.४४)
अ) जो झूठ नहीं बोलता है
ब) जो विद्यालय / गुरुकुल नहीं जाता है
क) जो टीवी देखता है
ड) जो इंद्रतृप्ति में लगा रहता है
- १३८) कोई कैसे अज्ञानता को हटा सकता है
अ) टीवी देखके क) प्रत्येक दिन पत्र-पत्रिका पढ़कर
ब) भागवत गीता का अध्ययन करके ड) देवी देवतोंओका पूजा करके
- १३९) दिव्य कृष्णभावना में दिव्यावस्था कब प्राप्त की जा सकती है ?
अ) जब देवतोंओ की पूजा करते है
ब) जब हम प्राणियों की हत्या नहीं करते
क) जब हम भगवान की सदिच्छा पर पूर्ण निर्भर रहते
ड) उपर में से कोई नहीं
- १४०) वैदिक संस्कृती का सार क्या है ?
अ) रिश्तेदारों की सेवा करना
ब) पेड़ लगाना
क) देवी देवताओं की पूजा करना
ड) भगवान के नाम का जप करना
- १४१) कौनसी आसक्ती बंधन का कारण है ? (भ.ग.२.४७)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) फल की आशा से कार्य करना । ब) भगवान की सेवा के रूप में कार्य करना ।
क) फल की आशा से अनासक्त कार्य करना । ड) ऊपर में से कोई भी नहीं।
- १४२) सच्चा योग क्या है ? (भ.ग.२.४८)
अ) योग की शिक्षा के लिए योग क्लास जाना। ब) प्राणायाम करना।
क) कृष्ण की आज्ञाओं का पालन करना । ड) झूठ न कहना।
- १४३) बुद्धि योग का अर्थ क्या है ? (भ.ग.२.४९)
अ) बुद्धि के साथ कार्य करना ब) अच्छे अंक को प्राप्त करना।
क) श्री.भगवान की दिव्य प्रेम—भक्ति करना । ड) शतरंज अच्छी तरह खेलना ।
- १४४) कृष्ण भावनाभावित कार्य को छोड़कर अन्य सभी कार्य क्यों गिरे हुए हैं ? (भ.ग.२.४९)
अ) वे बहुत मलिन हैं ।
ब) उनके लिए बहुत पैसों और बहुतसी व्यवस्था की आवश्यकता है ।
क) वे व्यक्ति को जन्म—मृत्यु के चक्र में बांध देते हैं
ड) वे पशुओं की हत्या करने को कहते हैं।
- १४५) व्यक्ति किस प्रकार अपने अज्ञान को दूर कर सकता है ? (२.५०)
अ) दूरदर्शन देखकर ब) समाचार पत्र पढ़कर
क) श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ कर ड) देवताओं की उपासना कर
- १४६) मुक्त जीव कहाँ के वासी है ? (२.५१)
अ) स्वर्ग लोक ब) ब्रम्ह लोक क) वैकुण्ठ लोक ड) कैलास लोक
- १४७) जो व्यक्ति कृष्ण को एवं उनके साथ अपने संबंध को तत्त्वतः जान लेता है , उसे क्या परिणाम प्राप्त होता है ? (२.५२)
अ) वह कर्मकाण्ड की प्रणाली का पालन अच्छी प्रकार से करता है ।
ब) वह भौतिक सामाजिक कार्यों को अच्छी प्रकार से करता है ।
क) वहा कर्मकाण्डीय वृत्तियों से पूरी तरह से नहीं विरक्त हो जाता है ।
ड) ऊपर में से कोई भी नहीं ।
- १४८) आत्मसाक्षात्कार की सबसे ऊँची सीढ़ी क्या है ? (२.५३)
अ) यह समझना कि सब कुछ एक है ।
ब) यह समझना कि सब कुछ भगवान है ।

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) यह समझना की मैं भगवान हूँ।
ड) यह समझना कि मैं कृष्ण का नित्यदास हूँ।
- १४९) कृष्णभावनाभावित व्यक्ति का प्राथमिक लक्षण है: (२.५४)
अ) वह मात्र कृष्ण की ही बातें करता है।
ब) वह कृष्ण से संबंधित विषयों पर ही बात करता है।
क) ऊपर के दोनों।
ड) ऊपर के कोई भी नहीं।
- १५०) किस प्रकार से व्यक्ति सभी भौतिक कामनाओं को अनायास त्याग सकता है ? (२.५५)
अ) कड़ी तपस्या करके ब) कृष्णभावनामृत के कार्यों में संलग्न होकर
क) वैदिक कर्म—काण्डीय यज्ञ करके ड) अच्छा व्यक्ति बन कर
- १५१) कृष्णभावनामृत व्यक्ति किस प्रकार त्रिविधा क्लेशों से चिंतीत नहीं होता? (२.५६)
अ) वह सभी क्लेशों को भगवान की कृपा के रूप में स्वीकार करता है।
ब) वह अपने आप को अपने पूर्व विकर्म के कारण उत्पन्न क्लेशों के जिम्मेदार मानता है।
क) वह यह देखता है की, श्री.भगवान की कृपा से, सभी क्लेशों की न्यूनतम तीव्रता है।
ड) ऊपर के सभी।
- १५२) दिव्या कार्यों की श्रेष्ठ दिव्यता क्या है ? (२.४०)
अ) कृष्णभावनामृत में तथा इंद्रिय—तृप्ती की आशा से रहित कार्य।
ब) अन्य व्यक्तियों के लिए सामाजिक सेवा।
क) जब असत्य नहीं बोलता है।
ड) जब व्यक्ति घूस नहीं देता है।
- १५३) भगवान श्रीकृष्ण की प्रत्यक्ष सेवा को छोड़कर अपने स्तर से गिर जानेवाले व्यक्ति गति है ? (२.५४)
अ) उनका परिश्रम व्यर्थ जाता है।
ब) कृष्ण की सेवा करने से उसके प्रयत्न उसे वापस कृष्णभावनामृत में ले आते हैं।
क) ऐसे कार्यों को कभी भी करना नहीं चाहिए।

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) ऐसे कार्य अच्छे नहीं होते ।
- १५४) श्री भगवान को किस प्रकार सबसे ज्यादा संतुष्ट कर सकते हैं?(२.४१)
 अ) नित्य दान देकर ब) मंदिर जाकर क) गुरु को संतुष्ट कर
- ड) ऊपर लिख में कोई भी नहीं
- १५५) सामान्यतः जनता बुद्धिमान क्यों नहीं होती ? (२.४३)
 अ) वे हर दिन समाचार पत्र नहीं पढ़ते
 ब) दूरदर्शन पर समाचार नहीं देखता
 क) वे पढ़े लिखे हैं ड) वे कर्म करने में आसक्त रहते हैं ।
- १५६) कृष्णभावनामृत में स्थिर व्यक्ति अच्छी और बुरे से क्यों प्रभावित नहीं है ?
 (२.५७)
 अ) वह वैराग्यपूर्ण (जीवन) रूप से जीवन का व्यवहार करता है ।
 ब) वह कोई भी कार्य नहीं करता ।
 क) वह अपने इर्द-गिर्द के सभी कार्यों संबंध नहीं रखता ।
 ड) क्योंकि वह मात्र कृष्ण- जो शुद्ध सत्त्व एवं परम है, पर ही नित्य ध्यान रखता है ।
- १५७) एकयोगी, भक्त अथवा आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति की कसौटी क्या है ?
 (२.५८)
 अ) वह अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करने में सक्षम है ।
 ब) वह भगवा वस्त्र पहन कर गले में रुद्राक्ष पहनता है ।
 क) वह अदभुत चमत्कार करता है ।
 ड) वह अपने हाथ में से राख उत्पन्न करता है ।
- १५८) किस प्रकार से समझा जा सकता है कि व्यक्ति को कृष्णभावनामृत में रूचि है ? (२.५९)
 अ) वह भौतिक इंद्रिय तृप्ति से विरक्त हो जाता है ।
 ब) वह कृष्ण के बारे में स्वप्न देखता है ।
 क) वह अपने माथे में लाल प्रकाश देखता है ।
 ड) वह दुनिया को त्याग देता है ।
- १५९) अंबीरिष महाराज किस प्रकार दुर्वासा मुनि पर हावी रहे ? (२.६०)
 अ) वह बहुत अच्छे योद्धा थे ।
 ब) उनके पास दिव्य शक्ति थी ।
 क) उनका मन मजबूत था ।

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) उनका मन कृष्णभावनामृत में संलग्न था ।
- १६०) बहुत से ऋषि , मुनि एवं योगी भौतिक इंद्रिय तृप्ति के शिकार कैसे बन जाते हैं ? (२.६०)
- अ) विचलित मन के कारण
ब) उनका मन पूर्ण रूप से कृष्ण से संलग्न नहीं होता ।
क) क्यों कि वे पूर्ण रूप से कृष्ण भावनाभावित नहीं हैं ।
ड) ऊपर के सभी
- १६१) दुर्वास मुनि बिना कारण अंबरिष महाराज पर क्यों क्रोधित हो गए ? (२.६१)
- अ) मिथ्या अहंकार के कारण
ब) अंबरिष महाराज ने दुर्वास को उचित सन्मान नहीं दिया था।
क) अंबरिष महाराज ने दुर्वास मुनि से पहले ही जल पान कर लिया ।
ड) ऊपर लिख में से कोई भी नहीं ।
- १६२) किस प्रकार से इंद्रियों को पूर्ण रूप से वश में किया जा सकता है ? (२.६२)
- अ) इंद्रियों से संबंधित सभी कार्यों को त्याग कर
ब) बड़े-बड़े यज्ञ संपन्न कर
क) दूरदर्शन देखकर
ड) भक्ति की शक्ति से ही
- १६३) इन व्यक्तियों में से सबसे इंद्रिय –नियंत्रित कौन है ? (२.६१)
- अ) दुर्वास मुनि ब) अंबरिष महाराज क) विश्वामित्र ड) इंद्र
- १६४) किस व्यक्ति की बुद्धि स्थिर मानी जाती है ? (२.६१)
- अ) जो परिक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है ।
ब) जब कोई शतरंज के खेल में जीत जाता है ।
क) जो व्यक्ति अपनी सभी इंद्रियों को नियंत्रित कर उन्हें कृष्ण पर केंद्रित करता है ।
ड) ऊपर लिखे में से कोई नहीं
- १६५) कौन भौतिक कामनाओं के वश में आ सकता है ? (२.६२)
- अ) सभी जीव ब) जीव क) भगवान ब्रम्हदेव ड) ऊपर के सभी
- १६६) श्रील हरिदास ठाकूर मायादेवी के अवतार से क्यों प्रभावित नहीं हुए थे ?
- अ) क्योंकि वे बहुत बुद्धिमान थे ।
ब) कुशल योगी थे ।
क) माया के सामने उन्होंने आँखें बंद कर लीं ।

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) वे श्री.भगवान के शुद्ध भक्त थे।
- १६७) योग की कौनसी प्रणाली अपनाने का सुझाव दिया गया है ? (३.१)
 अ) कर्मयोग ब) बुद्धियोग क) ज्ञानयोग ड) ध्यानयोग
- १६८) एक श्रद्धावान शिष्य के रूप में अर्जुन ने क्या किया ? (३.२)
 अ) उन्होंने अपने स्वामी के समक्ष अपनी परिस्थिति को समर्पित किया।
 ब) रोने लगे क) युद्ध करने लगे ड) ऊपर में से कोई नहीं
- १६९) अध्याय ३ में कृष्ण योग के किस पथ का विवरण देते हैं ? (३.३)
 अ) सांख्ययोग ब) बुद्धियोग क) ज्ञानयोग ड) कर्मयोग
- १७०) तिसरे अध्याय में श्रीकृष्ण अर्जुन को किस नाम से संबोधित करते हैं ? (३.३)
 अ) गुडाकेश ब) अर्जुन क) अनघ ड) कौन्तेय
- १७१) कृष्णने अर्जुन को कितने प्रकार के व्यक्ति बताए, जो आत्म साक्षात्कार का प्रयत्न करते हैं ? (भ.ग.३.३)
 अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार
- १७२) सांख्ययोग योग अर्थात्की प्रकृति का विश्लेषण एवं अवलोकन (३.३)
 अ) आत्मा और पदार्थ ब) पदार्थ पृथ्वी (भूमि)
 क) आत्मा और पृथ्वी ड) अंक और आत्मा
- १७३) (सांख्य योग मतलब) बुद्धि योग अथवा कृष्णभावनामृत के सिद्धांतों पर चलकर, व्यक्तिसे मुक्त हो सकता है। (३.३)
 अ) दुःख ब) कर्म-के फल क) कष्ट ड) कोई भी नहीं
- १७४) सिद्धांत -रहित धर्महै। (३.३)
 अ) मनोधर्म ब) व्यर्थ क) सार्थक ड) भावनात्मक कृति
- १७५) धर्म-रहित सिद्धांतहै।
 अ) मनोधर्म ब) व्यर्थ क) सार्थक ड) भावनात्मक कृति
- १७६)के बिना संन्यास समाज के लिए उत्पात ही लाता है।
 अ) हरिनाम का जप ब) प्रारब्ध कर्म

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) हृदय शुद्धि के बिना ड) वानप्रस्थ
१७७) अपि अस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात ।(३.४)
अ) मत ब) स्वल्पम क) अलाम ड) अहम
- १७८) सभी मानव असहाय्य रूप से के अनुसार कार्य करते हैं ।(३.५)
अ) प्रकृति के गुणोंसे ब) पूर्वजन्मों एवं इस जन्म के कर्म
क) व्यक्ति की इच्छा के अनुसार ड) प्रकृति
- १७९) आत्मा सदैव ही सचेत है क्योंकि (३.५)
अ) अपने शरीर की वजह से ब) वह आत्मा का स्वभाव है
क) वह भगवान का अंश है ड) वहा सच्चिदानंद है ।
- १८०)के बिना भौतिक शरीर हिल भी नहीं सकता । (३.५)
अ) शक्ति ब) परमात्मा क) आत्मा ड) ऊपर के सभी
- १८१) शरीर की तुलनासे की गई है । (३.५)
अ) रथ ब) यंत्र क) वाहन गाडी ड) मृत वाहन
- १८२) आत्मा को कैसे शुद्ध किया जाए । (३.५)
अ) शास्त्र में लिखित प्रारब्ध /कर्म कर
ब) कर्मयोग क) ध्यान योग ड) ऊपर के सभी
- १८३) श्री राम पर कौन हमलावर था (१.३६)
अ) कंस ब) हिरण्यकश्यपू क) रावण ख) दंतवक्र
- १८४) मिथ्याचारी का अर्थ है (३.६)
अ) नियंत्रित इंद्रिय एवं मन है
ब) अनियंत्रित मन एवं इंद्रिय
क) अनियंत्रित इंद्रिय पर नियंत्रित मन
ड) नियंत्रित इंद्रिय पर अनियंत्रित मन

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १८५) सबसे बड़ा कपटी ढोंगी वही है (३.६)
- अ) जो कपट करता है ब) जो झूठ कहता है क) जो ढोंगी है
ख) जो अपने आप को योगी कहता है, जबकि वह इंद्रिय तृप्ति के पीछे लगा हुआ है
- १८६) मिथ्याचारी के मन का लक्षण क्या है ? (३.६)
- अ) शुद्ध ब) अशुद्ध क) कपटी ड) राजनैतिक
- १८७) जीवन का उद्देश्य क्या है (३.७)
- अ) भौतिक बंधन से मुक्त होकर भगवद्धाम पहुँचना ब) भगवद् प्रेम
क) भगवद् सेवा ड) ऊपर के सभी
- १८८) श्रीमद् भगवद्गीता हमें किस तरह से अपना गुजारा करने को कहती है (३.७)
- अ) निष्काम ब) बिना आसक्ति के क) निर्धन ड) निर्लाभ
- १८९) आत्मसाक्षात्कार के लिए क्या चाहिए (३.७)
- अ) धन ब) योगसिद्धि क) समझ ड) नियमित जीवन
- १९०) निर्दोष जनता को कपट करने के लिए दिखावटी आध्यत्मिकता धारण करनेवाले मिथ्याचारी से बेहतर कौन है (३.७)
- अ) संन्यासी ब) प्रामाणिक व्यक्ति क) ब्रम्हचारी ड) गृहस्थ
- १९१) एक श्रद्धावान् / गंभीर सफ़ाईवाले से कहीं बेहतर है। (३.७)
- अ) कपटी / ढोंगी ध्यानी ब) भक्तियोगी क) कर्मयोगी ड) ऊपर में से कोई नहीं
- १९२) श्री भगवान को क्या स्वीकार नहीं है ? (३.८)
- अ) लड़ना ब) भीख मांगना क) गुजारे के लिए संन्यास धारण करना
ड) ऊपर के सभी
- १९३) हमें कब तक कार्य करना चाहिए ? (३.८)
- अ) मृत्यु तक ब) भौतिक इच्छाओं का शुद्धीकरण होने तक
क) हमें भौतिक कामनाओं होने तक ड) ऊपर में से कोई भी नहीं.

भगवद्गीता प्रश्नावली

- १९४) इंद्रिय तुष्टीकरण क्या है? (३.८)
अ) काम ब) भौतिक प्रकृति पर अपना अधिकार/स्वामित्व करना
क) आहार, निद्रा, मैथुन ड) ऊपर के सभी
- १९५) कार्यके लिए संतोष के लिए किया जाना चाहिए। (३.९)
अ) गणेश ब) शिव क) ब्रम्ह ड) विष्णु
- १९६) “आप इस यज्ञ से संतुष्ट रहिए क्योंकि इसके आचरण से आपको.....
प्राप्ती होगी। (भ.ग.३.१०)
अ) धन ब) सभी इच्छित फल क) संतोष ड) पुत्र
- १९७) भौतिक सृष्टि का उद्देश्य क्या है (३.१०)
अ) हमारे भोग आनंद के लिए ब) भगवान के भोग के लिए
क) पुनः भगवद्धाम लौटने के लिए एक मौका ड) ऊपर के सभी
- १९८) भौतिक सृष्टि में सभी जीव भौतिक प्रकृतिद्वारा बद्ध हैं
जिसका कारण है (३.१०)
अ) शरीर ब) कामना क) मन ड) कृष्ण से भूले हुए संबंध
- १९९) वैदिक सिद्धांत क्या हैं (३.१०)
अ) यज्ञ क्रिया ब) ज्ञान प्राप्ति क) सत्त्व गुण की प्राप्ति
ड) शाश्वत संबंध का ज्ञान
- २००) भगवान विष्णु (३.१०)
अ) सभी जीव, ब्रम्हांड एवं सौंदर्य के नाथ हैं एवं उसके रक्षक भी
ब) मात्र जीवों के साथ हैं
क) सभी जीवों, ब्रम्हांडो एवं सौंदर्य के नाथ ही है।
ड) मात्र सभी के रक्षक
- २०१) यज्ञ—क्रिया का उद्देश्य (३.१०)
अ) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ब) विष्णु की संतुष्टि क) देवताओं की संतुष्टि

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) वर्षा के लिए
- २०२) कलियुग में किस यज्ञ का महत्व है..... (३.१०)
- अ) अश्वमेध यज्ञ ब) संकीर्तन यज्ञ क) दोनों ड) कोई भी नहीं
- २०३) संकीर्तन यज्ञ को किसने प्रारंभ किया (भ.ग.३.१०)
- अ) रामानुजाचार्य ब) मध्वाचार्य क) शंकराचार्य ड) श्रीचैतन्य महाप्रभु
- २०४) भगवान कृष्ण का अपने भक्त के रूप में (श्री चैतन्य महाप्रभु) श्रीमद्भागवतवर्णन है। (३.१०)
- अ) SB ११.५.३० ब) SB ११.५.३२ क) SB ११.५.३१ ड) SB ११.५.३३
- २०५) देवताशक्तिप्रद (३.११)
- अ) जगत के ईश्वर है। ब) प्रशासक है।
- क) जगत के पालक है। ड) जगत के सुहृद् है।
- २०६) सभी यज्ञों में किसकी अर्चना होती है (३.११)
- अ) भगवान गणेश ब) इंद्र क) भगवान शिव ड) भगवान विष्णु
- २०७) जो देवताओं को अर्पण किए बिना ही भोग करता है वह अवश्य ही.....है। (३.१२)
- अ) स्वार्थी ब) निःस्वार्थी क) चोर ड) मुख
- २०८) व्यक्ति के भिन्न भौतिक गुणानुसार भिन्न प्रकार के यज्ञ का प्रावधान है। (३.१२)
- अ) सत्य ब) असत्य क) कभी सत्य ड) कभी असत्य
- २०९) सामान्य मनुष्य के लिए कितने यज्ञों की सलाह दी गई है (३.१२)
- अ) ५ ब) ६ क) ७ ड) ८
- २१०) श्री भगवान के भक्त सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं क्योंकि (३.१३)
- अ) वे कोई दुष्कार्य नहीं करते ब) वे भगवान को अर्पित भोजन ही ग्रहण करते हैं। क) वे भगवान में श्रद्धा रखते हैं। ख) ऊपर के लिखे सभी खुद के इंद्रिय भोग के लिए भोजन को बनाते हैं
- २११) वह मात्रही ग्रहण करते हैं (३.१३)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) पाप ब) भोजन क) पाप और भोजन ड) ऊपर में से कुछ भी नहीं
- २१२) भगवान् कृष्ण के द्वारा भगवद्गीता उपदेश की सही परंपरा क्या है (४.१)
 अ) विवस्वान -मनु -ईक्ष्वांकु ब) मनु- विस्वान- ईक्ष्वांकु
 क) ईक्ष्वांकु- मुन ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- २१३) काम वासना के बंधन से प्रजा को बचाने के लिएको भगवद्गीता का ज्ञान समझाना चाहिए।(भ.ग.४.१)
 अ) ब्राम्हण ब) क्षत्रिय क) ऊपर में से कोई भी नहीं ड) दोनों..
- २१४) मानव जीवन का सही अर्थ किस प्राप्ति के लिए है ? (४.१)
 अ) दिव्य ज्ञान ब) ब्रम्ह-ज्ञान क) आर्थिक विकास ड) ऊपर के सभी
- २१५) सूर्य भगवान का नाम क्या है..... (४.१)
 अ) जन्मजेय ब)विवस्वान क) मैत्रेय ड) सोम
- २१६) सूर्यका प्रतिनिधी है(४.१)
 अ) भगवान के नेत्र ब) भगवान का नाक
 क) भगवान के कर्ण ड)भगवान के मस्तिष्क
- २१७) कलियुग के प्रारंभ से लगभगवर्ष बीत चुके हैं।(४.२)
 अ) ३००० ब) ४००० क) ५००० ड) ६०००
- २१८) भगवद्गीता का परम विज्ञानके द्वारा प्राप्त है।(४.२)
 अ) लिखित रूप से ब) अनादि काल से राजर्षियों के परंपरा से
 क) दोनों ड) कोई भी नहीं.
- २१९) भगवद्गीता मुख्यतः..... के लिए ही है।(४.२)
 अ) राजर्षियों ब) सामान्य प्रजा क) विद्वान ब्राम्हणों ड)कोई भी नहीं.
- २२०) भगवान में कौन विश्वास नहीं करता (४.२)
 अ) सामान्य प्रजा ब) विद्वान ज्ञानी क) असुर ड) ऊपर के सभी
- २२१) मानवता के लिए एक बड़ा वरदान क्या है(४.२)
 अ) श्रीमद्भगद्गीता को यथारूप स्वीकृत करना
 ब) भगवद्गीता को एक सिद्धांत ग्रंथ के रूप में स्वीकार करना
 क) भगवद्गीता को कथारूप में स्वीकृति

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- २२२) परम पुरुष के साथ संबंध का यह पुरातन विज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को बताया क्योंकि वे उनकेथे।(४.३)
- अ) शिष्य ब) भक्त क) सखा ड) दोनों ब और क
- २२३) भगवद्गीता के रहस्यमय ज्ञान को समझाना किस के लिए असंभव है.....(४.३)
- अ) सामान्य प्रजा ब) असुर क) भक्त ड) ऊपर में से कोई नहीं.
- २२४) अर्जुन कृष्ण कोके रूप में स्वीकार करते हैं।(४.३)
- अ) भगवान ब) दिव्य मनुष्य क) यागसिद्ध ड) सामान्य मनुष्य
- २२५) भगवद्गीता का यह महान ज्ञान से हमें कैसे मिलेगा.....
- अ) स्वयं समझने का प्रयत्न कर ब) अपनी टिप्पणी को मानकर
- क) बाजार की सभी टिप्पणीयोंका छानकर ड) गुरुशिष्य परंपरा का अनुगमन कर
- २२६) अब तक किसने भगवद्गीता पर व्याख्या दी है.....(४.४)
- अ) भगवान के भक्त ब) भगवान विरोधी असुर क) दोनों ड) कोई भी नहीं
- २२७) विवस्वानहै।(४.४)
- अ) आयु में कृष्ण से वरिष्ठ है। ब) कृष्ण से आयु में कनिष्ठ है
- क) कृष्ण की समान आयु का है। ड) कोई भी नहीं
- २२८) अर्जुन किसके लिए पुछताछ करता है ? (४.४)
- अ) भगवान में विश्वास रखनेवालों के लिए
- ब) भगवान में विश्वास नहीं रखने वालों के लिए
- क) अपने आप के लिए ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- २२९) दिव्यत्व /अध्यात्मिकता में अंतिम शब्द किसके है (४.४)
- अ) भगवद्गीता ब) कृष्ण क) वेद ड) उपनिषद्
- २३०) कृष्णके पुत्र के रूप में अवतरित हुए।(४.४)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) देवकी ब) यशोदा क) रोहिणी ड) ऊपर के सभी
 २३१)कृष्ण को सामान्य मनुष्य मानते हैं। (४.४)
 अ) अस्तिक भक्त ब) नास्तिक भक्त क) दोनों ड) कोई भी नहीं.
 २३२) भगवान श्रीकृष्ण हमेशाका प्रकट है। (४.५)
 अ) श्रेष्ठ वैदिक पंडित ब) शुद्ध भक्त क) असुर ड) सामान्य प्रजा
 २३३) कौन सभी अवतारों में उपस्थित हैं। (४.५)
 अ) कृष्ण ब) राम क) नृसिंह ड) वामन
 २३४) ब्रम्हसंहिता अनुसार “अच्युत” का अर्थ है (४.५)
 अ) स्वयं को कभी न भूलनेवाला ब) जो महान नेता है
 क) जो बहुत ज्ञानी है ड) ऊपर के सभी
 २३५) जीव क्यों सब कुछ भूल जाता है..... (४.५)
 अ) क्योंकि वह अणु है। ब) क्योंकि वह भगवान का अंश है।
 क) देह परिवर्तन के कारण ड) अपनी विस्मरणशीलप्रकृति के कारण
 २३६) “अद्वैत” का अर्थहै। (४.५)
 अ) देह और आत्मा में अंतर नहीं ब) दोनों स्थल साथ साथ उपस्थित
 क) द्वैत से मुक्त होना ड) सभी
 २३७) कृष्णमें अवतरित होते हैं (४.६)
 अ) हर वर्ष ब) हर (शत) दशक क) हर १०० शतकों के पश्चात ड) हर युग में
 २३८) कुरुक्षेत्र युद्ध के समय कृष्ण केथे। (४.५)
 अ) बहुत सारे पुत्र ब) बहुत सारे पौत्र क) दोनों अ व ब ड) कोई भी नहीं
 २३९) कुरुक्षेत्र के युद्ध के समय कृष्णकी तरह दिख रहे थे। (४.६)
 अ) १०-१५ वर्ष ब) २०-२५ वर्ष क) ३०-४० वर्ष ड) २००० से ज्यादा वर्ष
 २४०) जन्म पश्चात कृष्ण ने देवकी कोके रूप में दर्शन दिया।
 अ) असहाय शिशु ब) दो हाथवाले रूप में

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) चार हाथोंवाले नारायण के रूप में. ड) विश्वरूप
- २४१) भगवान कृष्ण कब अवतारित होते हैं (४.९)
- अ) जब और जहाँ धर्म के आचारण का पतन होता है
- ब) अधर्म में बढ़ावा क) दोनों अ और ब ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- २४२) धर्म के सिद्धांतमें दिए हुए हैं।
- अ) वेदों ब) ऋषि मुनियों के ग्रंथों क) महात्माओं के लेखों
- २४३) श्री भगवान की प्रत्यक्ष / साक्षात् आज्ञा ही (४.७)
- अ) अधिकारी ज्ञान है ब) धर्म के सिद्धांत है
- क) मानवता के लिए शुभ शब्द हैं ख) नीतिज्ञान है
- २४४) धर्म का श्रेष्ठ सिद्धांत है। (४.७)
- अ) भगवान श्रीकृष्ण के प्रती शरणागत होना ब) प्रकृति के प्रति शरणागत होना
- क) सभी मानवों से प्रेम करना ड) सभी जीवों से प्रेम करना
- २४५) भगवान बुद्ध (४.७)
- अ) शक्त्यावेश अवतार थे ब) भगवान के अवतार थे क) भगवान के भक्त थे
- ड) ऊपर के सभी
- २४६) किसी को अवतार के रूप में तभी मानना चाहिए, जब वह (४.७)
- अ) शास्त्रों में वर्णित हो ब) सभी द्वारा स्वीकृत हों
- क) समान के कुछ ज्ञानीयों द्वारा स्वीकृत हो ड) पुरातन साहित्य में वर्णित हों
- २४७) कृष्ण भावनामृत..... (४.७)
- अ) मनोधर्म है ब) धार्मिक व्यक्तियों का उद्देश्य है
- क) भगवान के अवतारों का उद्देश्य ड) संत ऋषियों का उद्देश्य है
- २४८) कृष्ण प्रत्येक युग में अवतारित होते हैं ,के लिए (४.८)
- अ) साधुओं के उद्धार ब) दृष्टियों के नाश
- क) धर्म के सिद्धांतों की पुनःस्थापना ड) ऊपर के सभी
- २४९) भगवद्गीता के अनुसार साधु हैं (४.८)
- अ) कृष्णभावनामृत व्यक्ति ब) समाजसेवक

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) योग सिद्धियों के जानकार ड) लंबी दाढ़ीवाले व्यक्ति
- २५०) प्रल्हाद महाराजके पुत्र थे (४.८)
- अ) रावण ब) हिरण्यकश्यपू क) दुर्योधन ड) कुम्भकर्ण
- २५१) देवकीकी बहन थी (४.८)
- अ) कंस ब) रावण क) वसुदेव ड) नंद
- २५२) अवतारों के विभिन्न प्रकार कौनसे हैं (४.८)
- अ) पुरुषावतार ब) गुणावतार क) लीलावतार ड) ऊपर के सभी
- २५३) सभी अवतारों के स्रोत या उद्गम कौन है (४.८)
- अ) भगवान राम ब) भगवान बुद्ध क) भगवान कृष्ण ड) भगवान गणेश
- २५४) कृष्ण के अवतारों का मुख्य उद्देश्य है। (४.८)
- अ) असुरों का संहार करना ब) धार्मिक सिद्धांतों की स्थापना करना
- क) शुद्ध भक्तों की संतुष्टि के लिए ड) पृथ्वी पर भार कम करने के लिए
- २५५) श्री. चैतन्य महाप्रभु के अवतार का वर्णन शास्त्रों में वर्णित है। (४.८)
- अ) उपनिषदों में ब) महाभारत क) भागवत ड) ऊपर के सभी
- २५६) भगवान कृष्ण के शरीर की दिव्य प्रकृति तथा उनके कार्यक्लापों के ज्ञान का फल क्या है (४.९)
- अ) भौतिक जगत में जन्म ब) भौतिक जगत में पुनः जन्म नहीं लेना
- क) भगवधाम की प्राप्ति ड) दोनों ब और अ
- २५७) बहुत कष्ट के पश्चात मुक्ति को प्राप्त करते हैं। (४.९)
- अ) योगी ब) निर्विशेषवादी क) भक्त ड) दोनों अ और ब
- २५८) कृष्ण को भगवान के रूप में स्वीकार करनेवाले की क्या गति होती है
- अ) तुरंत मुक्ति की प्राप्ति करता है ब) भगवान के दिव्य संगति की प्राप्ति करत है
- क) वह सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है ड) ऊपर के सभी (४.९)
- २५९) भगवान कृष्ण के ज्ञान से शुद्ध व्यक्ति को क्या पुरस्कार प्राप्त होता है। (४.९)
- अ) इस विश्व में महान ऐश्वर्य ब) अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति
- क) उनकी दिव्य प्रेम भक्ति ड) इस लोक में एवं अगले जन्म में बहुत विख्यात बन जाना

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २६०) आध्यत्मिक जीवनहै (४.१०)
अ) व्यक्तिगत और साकार है ब) निवैयक्तिक क) मिथ्या
ड) अशाश्वत मनोधार्मिक
- २६१) निर्विशेषवादी जीवों की तुलना से करते हैं (४.१०)
अ) प्रकृति के अशाश्वत रूपों ब) प्रकृति
क) समुद्र के बुलबुले, जो पुनः समुद्र में मिल जाते हैं
ड) समुद्र
- २६२) आध्यत्मिक सिद्धि प्राप्ति से किनसे मुक्ति प्राप्त करता है
अ) समस्त भौतिक आसक्ती ब) व्यक्तिगत आध्यत्मिक स्वरूप का भय
क) शून्यवाद से उत्पन्न हताशा ड) ऊपर के सभी
- २६३) जीवन की भौतिक संकल्पना से मुक्ति के लिए हमें..... (४.१०)
अ) भगवान के प्रति पूर्ण शरणागति लेना चाहिए
ब) प्रामाणिक गुरु से ज्ञान का बोध लेना चाहिए
क) भक्तिमय जीवन के सभी नियमों का पालन करना चाहिए
ड) ऊपर के सभी
- २६४) भक्ति के अंतिम स्तर को कहते हैं (४.१०)
अ) भगवद् प्रेम ब) मानवप्रेम क) समान प्रेम ड) सभी जीवों के लिए प्रेम
- २६५) भगवान की सच्ची भक्ति को..... कहा जाता है (४.१०)
अ) प्रेम ब) भाव क) आनंद ड) उन्माद
- २६६) कृष्ण जीवों को उनकीके अनुसार पुरस्कृत करते हैं (४.११)
अ) बुद्धि ब) शरणागती क) तपस्या ड) योगसिद्धि
- २६७) सभी के साक्षात्कार का उद्देश्यहै (४.११)
अ) ब्रम्हज्योति ब) कृष्ण क) परमात्मा ड) विरजा

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २६८) किसे कृष्ण का भजन करना चाहिए..... (४.११)
अ) जो निष्काम है ब) जो सभी कर्म फलों के लिए कामी है
क) जो मुक्ति चाहता है ड) ऊपर के सभी
- २६९) आध्यत्मिक आत्मघात करनेवाला किसे माना जाता है (४.११)
अ) निर्विशेषवादी ब) विशेषवादी क) भक्त ड) असुर
- २७०) जनता देवताओं की आराधना क्यों करती है (४.१२)
अ) उनके प्रति बहुत गाढ़ प्रेम से
ब) उनके भय से
क) सकाम कर्मों में सिद्धि की प्राप्ति के लिए
ड) भौतिक कामनाओं से कोई आशा न रखकर
- २७१) देवताओं का स्थान क्या है ? (४.१२)
अ) भगवान के विभिन्न रूप है ब) भगवान के अवतार है
क) भगवान के विभिन्न अंश है ड) ऊपर के सभी
- २७२) जो भगवान और देवताओं को समान मानता है उसे
. कहा जाता है (४.१२)
अ) पाषंडी/नास्तिक ब) अस्तिक क) निष्पक्ष ड) पक्षपाती
- २७३) निर्विशेषवादीयों के नेता है (४.१२)
अ) श्रीपाद रामानुजाचार्य ब) श्रीपाद शंकराचार्य क) श्रीपाद मध्वाचार्य
ड) श्रीपाद चैतन्य
- २७४) देवताओं के वरदान (४.१२)
अ) दिव्य और शाश्वत है ब) नित्य और महान है
क) भौतिक एवं क्षणिक होते हैं ड) दोनों अ और ब
- २७५) मानव समाज के कितने वर्ग हैं (४.१३)
अ) ४ ब) ३ क) २ ड) १

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २७६) भगवान के विषय में क्या सत्य है (४.१३)
 अ) वह सभी के स्रष्टा हैं ब) सभी उनसे ही उत्पन्न है
 क) सब कुछ उनकेद्वारा ही पालित है ड) ऊपर के सभी

२७७) क्या असत्य है (४.१३)
 अ) ब्राम्हण – सत्वगुण ब) क्षत्रिय – रजोगुण
 क) वैश्य – रजोगुण व तमोगुण ड) शुद्र – सत्व एवं तमोगुण

२७८) भगवान कृष्ण समाज के किस वर्ण के हैं (४.१३)
 अ) ब्राम्हण ब) क्षत्रिय क) वैश्य ड) ऊपर में से कोई भी नहीं

२७९) मानव समाज के वर्गों से कौन परे हैं (४.१३)
 अ) श्री.भगवान ब) श्री भगवान के भक्त
 क) कृष्णाभावनाभावित व्यक्ति ड) ऊपर के सभी

२८०) कर्मफल के बंधन में कौन बद्ध नहीं होता है? (४.१४)
 अ) जो जानता है कि कृष्ण के ऊपर किसी कर्म का प्रभाव नहीं पड़ता
 ब) जो जानता है कि कृष्ण कर्म फल के लिए इच्छुक नहीं है
 क) दोन अ और ब ड) ऊपर में से कोई नहीं

२८१) अपने पूर्व अच्छे और बुरे कर्मों के फल के लिए कौन जिम्मेदार है? (४.१४)
 अ) मनुष्य ब) देवता क) पशु ड) ऊपर के सभी

२८२) जीवके लिए जिम्मेदार है। (४.१४)
 अ) दूसरों के कर्म ब) स्वयं के कर्म क) स्वयं एवं दूसरे के एकत्रित कर्म
 ड) ऊपर में से कोई नहीं

२८३) कृष्ण भावनामृतके लिए समानरूपी लाभकारी है (४.१५)
 अ) भौतिक कामनाओं से मुक्ती ब) भौतिक कामनाओं को पूर्ण करने
 क) दोनों ड) कोई नहीं

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २८४) अर्जुन की कौनसी भावना को भगवान कृष्ण को स्वीकार नहीं किया (४.१५)
अ) युद्धक्षेत्र के कार्य से विमुख होना ब) सभी जीवों के प्रति दया
क) सभी सम्मिलित योद्धों को सम्मान ड) ऊपर के सभी
- २८५) कृष्ण भावनामृत के ज्ञान को किस परंपरा से वितरीत किया गया था
अ) सूर्यदेव –ईक्ष्वाकु –मनु ब) सूर्यदेव –मनु – ईक्ष्वाकु
क) ईक्ष्वाकु –मनु –सूर्यदेव ड) मनु –ईक्ष्वाकु –सूर्यदेव
- २८६) धर्म के सिद्धांतों का निर्माण मात्रही कर सकते हैं। (४.२६)
अ) योगी ब) ज्ञानी क) स्वयं भगवान ड) वेद पंडित
- २८७) किसे १२ महाजनों में नहीं गिना जाता..... (४.१६)
अ) ब्रम्हा ब) नारद क) अर्जुन ड) भीष्म
- २८८) कर्म की बारीकियों को समझना बहुत ही कठिन है। अतः हमें (४.२७)
अ) कर्म, विकर्म एवं अकर्म का ज्ञान होना चाहिए
ब) वेदों को कंठस्थ करना चाहिए
क) भौतिक जगत को सुधारने का ज्ञान होना चाहिए ड) ऊपर के सभी
- २८९) कर्म के भिन्न प्रकार कौनसे हैं (४.२७)
अ) कर्म ब) विकर्म क) अकर्म ड) ऊपर के सभी
- २९०) अकर्म का अर्थ (४.१८)
अ) कोई भी कर्म नहीं करना ब) कार्यरहित
क) कर्म के फलसे रहित ड) स्थिर
- २९१) किसे पूर्ण ज्ञान में स्थित समझना चाहिए (४.१९)
अ) जो वेदों का ज्ञाता है ब) जो पशुओं पर दया करता है
क) जो कार्य नहीं करता ड) जो इन्द्रिय तृप्ति की कामना से रहित होता है
- २९२) कर्म के बंधनों से मुक्तिसे ही संभव है। (४.२०)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) वेदांत भावनामृत ब) कृष्णभावनामृत क) गुरु भावनामृत ड) राष्ट्र भावनामृत
२९३) कृष्णभावनाभावित व्यक्ति के लक्षण क्या हैं (४.२०)
अ) वह स्वयं के पालन में आसक्त नहीं है
ब) वह पदार्थों की प्राप्ति के लिए चिंतित है
क) वह अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए व्याकुल है
ड) वह कृष्ण पर कुछ भी नहीं छोड़ता एवं सीमा के बाहर परिश्रम करता है
२९४) संसार की द्वैतताके रूप में अनुभव किया जाता सकता है।(४.२२)
अ) ग्रीष्म-शीत ब) सुख क) दुःख ड) ऊपर के सभी
२९५) कब व्यक्ति पूर्ण दिव्य ज्ञान में स्थित है ?(४.२२)
अ) वह सफलता एवं असफलता दोनों में ही समभाव रहता है ।
ब) वह द्वैत के परे है
क) वह कृष्ण के संतोष के लिए किसी भी कार्य को करने के लिए सहमत नहीं है.
ड) ऊपर के सभी
२९६) इस श्लोक के अनुसार कौन पूर्णतः ब्रह्म में लीन हो जाता है ।
(४.२३)
अ) जो प्रकृति के गुणों से अनासक्त है ब) जो दिव्य ज्ञान में पूर्ण रूप से स्थित है
क) दोनों अ और ब ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
२९७) यज्ञ का अर्थहै (४.२४)
अ) सभी सामग्री के साथ आहुति ब) मानवता के संतोष के लिए त्याग
क) विष्णु /कृष्ण के संतोष के लिए त्याग ड) ऊपर के सभी
२९८) ब्रह्म शब्द का अर्थ है..... (४.२४)
अ) अध्यात्मिक ब) ब्रम्हदेव क) वैदिक ड) भौतिक

भगवद्गीता प्रश्नावली

- २९९) समाधि का अर्थ (भ.ग.) है (४.२४)
अ) आसन ब) गहरी निद्रा में मन का नियंत्रण
क) कृष्णभावनामृत में मन की मग्नता ड) ऊपर के सभी
- ३००) किसे 'यज्ञ' पुरुष भी कहा जाता है ?..... (४.२५)
अ) अग्नि ब) इंद्र क) विष्णु ड) चंद्र
- ३०१) देवताओं के क्या कार्य है? (४.२५)
अ) जगत को उष्मा प्रदान करना ब) जगत को जल प्रदान करना
क) जगत को प्रकाश प्रदान करना ड) ऊपर के सभी
- ३०२) सिद्ध योगी बनने के लिए कौन योग्य है (४.२६)
अ) ब्रम्हचारी ब) गृहस्थ क) संन्यासी ड) ऊपर के सभी
- ३०३) पतंजली योग सूत्र में आदमी को कहा गया है। (४.२७)
अ) प्रत्यगात्मा ब) विमुक्तत्मा क) परमात्मा ड) ऊपर के सभी
- ३०४) देह में कौनसी प्राणवायु उपस्थित है? (४.२७)
अ) अपान वायू ब) व्यान वायू क) उदान वायू ड) ऊपर के सभी
- ३०५) चातुर्मास में..... आते हैं (४.२८)
अ) जुलाई-अक्तूबर ब) जुन-सितंबर क) अगस्त-नवंबर ड) मई-अगस्त
- ३०६) प्राणायम का अर्थ है
अ) श्वास क्रिया को नियंत्रित करना ब) आसनों को नियंत्रित करना
क) ग्रहों को नियंत्रित करना ड) दूसरों के जीवन पर नियंत्रण करना
- ३०७) भौतिक बंधन से किस प्रकार मुक्त हो सकते हैं?....(४.२९)
अ) सभी कार्यों को रोक कर
ब) श्वास-क्रिया को रोक कर
क) सभी इंद्रियों के कृष्णभावनामृत में नियंत्रित करके
ड) ऊपर के सभी

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३०८) कुंभक योग से व्यक्ति.....(४.२९)
- अ) मंत्र से जल को भर सकता है ब) आयु को बढ़ा सकता है
- क) विमान के बिना उड़ सकता है ड) सभी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है
- ३०९) सभी यज्ञों का मूल / समान उद्देश्य क्या है ? (४.३०)
- अ) आर्थिक स्थिरता को लाना ब) विश्व की दरिद्रता को घटना
- क) विश्व में शांति का स्थापना ड) इंद्रिय नियंत्रण
- ३१०) भौतिक जगत की सभी समस्याओं का समाधान क्या है (४.३१)
- अ) अच्छा नैतिक व्यवहार ब) देवताओं की उपासना
- क) सामाजिक भावना ड) कृष्णभावनाभावित जीवन
- ३११) मनुष्य जीवन की तुलना किससे की गई है (४.३१)
- अ) खड्डे ब) नदी क) समुद्र ड) खान
- ३१२) सभी यज्ञों का प्रावधानके लिए हैं। (४.३१)
- अ) आर्थिक विकास ब) इंद्रिय तृप्ति
- क) देहमुक्ति ड) दुनिया/जगत में बंधन के लिए
- ३१३) आत्म साक्षात्कार के लिए श्री भगवान का क्या उपदेश है?..... (४.३४)
- अ) हमें स्वयं बहुत श्रम करना चाहिए
- ब) एक पारंपारिक प्रामाणिक गुरु स्वीकारना /शरणागती
- क) सभी शास्त्रों से ज्ञान को प्राप्त करना
- ड) सभी नियमों का पालन करना
- ३१४) गुरु को शरणागत होकर क्या करना चाहिए..... (४.३४)
- अ) विनय भाव से प्रश्न पूछना चाहिए ब) सेवा करनी चाहिए
- क) सत्य को जानने का प्रयास करना चाहिए ड) ऊपर के सभी
- ३१५) आध्यात्मिक जीवन में प्रगति का रहस्य क्या है..... (४.३४)
- अ) खुद के कठोर प्रयास ब) यज्ञ –क्रिया

भगवद्गीता प्रश्नावली

- क) गुरु की प्रसन्नता ड) वेदांत का अध्ययन
- ३१६) भगवद् गीता में किसकी निंदा की गई है..... (४.३५)
- अ) अंध-विश्वास ब)व्यर्थ-प्रश्न क)दोनो अ और ब ड) कोई भी नहीं
- ३१७) निर्विशेष ब्रम्ह (४.३५)
- अ) भगवान् कृष्ण का ही अवतार है ब) भगवान् कृष्ण का ही रूप है
- क) भगवान् कृष्ण की वैयक्तिक तेज है ड) स्वयं भगवान् ब्रम्ह
- ३१८) ब्रम्हसंहिता के अनुसार परम भगवान् कौन है (४.३५)
- अ) भगवान् ब्रम्हा ब) भगवान् कृष्ण क)भगवान् गणेश ड) भगवान् शिव
- ३१९) परम अर्थात् (४. ३५)
- अ) $१ + १ = १$ ब) $१ + १ = २$ क) $२ + २ = अनंत$ ड) ऊपर से कोई भी नहीं
- ३२०) भगवद्गीता का पूर्ण इस बात पर केंद्रित है कि (४. ३७)
- अ) अर्जुन लड़ना शुरू करे
- ब) युद्ध करने का ज्ञान देना
- क) जीव कृष्ण से भिन्न नहीं हो सकता
- ड) राजनैतिक समस्याओं समाधान कैसे हो
- ३२१) मुक्ति का अर्थ है (४. ३७)
- अ) कर्म से मुक्ति ब) इस जगत से मुक्त
- क) अपनी श्रेष्ठ शक्तियों को जानना ड)कृष्ण के नित्यदास के रूप में स्थित होना
- ३२२) जिस प्रकार अग्नि लकड़ी को भस्म कर देती है , उसी प्रकार से ज्ञान की अग्निको भस्म कर देती है ।(४. ३८)
- अ) भौतिक कर्म के फलों ब) आध्यत्मिक कर्म के फलों
- क) सभी कर्म फलों ड) ऊपर में से कोई भी नहीं.
- ३२३)हमारे बंधन का कारण है ।(४. ३८)
- अ) अशांति ब) अज्ञान क) ज्ञान ड) आसक्ति

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३२४) योग का परिपक्व फलहै। (४.३९)
 अ) दिव्य ज्ञान ब) महान शक्ति क) योग सिद्धि ड) ऊपर के सभी
- ३२५) यह असत्य है..... (४.४०)
 अ) अविद्या बंधन का कारण है
 ब) ज्ञान मुक्ति का कारण है
 क) दिव्य ज्ञान अर्थात् आध्यत्मिक ज्ञान
 ड) ज्ञान एवं शांति कृष्णभावनामृत में पूर्ण नहीं होते
- ३२६) किस व्यक्ति को कृष्ण के ज्ञान में सिद्धि प्राप्त हो सकती है? (४.४०)
 अ) कृष्ण के प्रति श्रद्धावान ब) इंद्रिय नियंत्रण करनेवाला
 क) ऊपर के दोनों ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- ३२७) किसे भगवत भावनामृत प्राप्त नहीं हो सकता ? (४.४०)
 अ) अज्ञानी ब) अश्रद्धालु
 क) संशयात्मा जो शास्त्रों पर विश्वास नहीं कर सकता ड) ऊपर के सभी
- ३२८) सफलता को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ? (४.४०)
 अ) महान आचार्यों के पदचिन्हों पर चलकर ब) महान तपस्या करके
 क) नीति का पालन करके ड) वैदिक पंडितों का अनुगमन करके
- ३२९) किसने किससे कहा..... (५.१)
 पहले आप मुझे कार्य को त्यागने के लिए कहते हैं, फिर आप मुझे भक्तिमय कार्य करने के लिए कहते हैं। कृपया आप मुझे यहाँ बता सकते हैं कि दोनों में से क्या अधिक लाभदायक है ?
 अ) अर्जुन-कृष्ण ब) संजय-कृष्ण क) कृष्ण-अर्जुन ड) धृतराष्ट्र-संजय
- ३३०) रिक्त स्थान पूर्ति करें (५.१)
 भक्तिमय कार्यसे कहीं बेहतर है।
 अ) मनो धारणा (भ्रम) ब) मनोचिंतक आध्यत्मिक चिंतक
 क) आध्यत्मिक चिंतक ड) उपर में से कोई भी नहीं
- ३३१) निम्न में से कौनसा वाक्य सत्य है? (५.१)
 अ) भक्ति शुष्क मनोचिंतन से बेहतर है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ब) शुष्क मानसिक चिंतन भक्ति से कठिन है
 ३३२) पथ अधिक सुगम है (५.१)
- अ) ज्ञान ब) योग क) कर्म ड) भक्ति
 ३३३) किस अध्याय में आत्मा और भौतिक जगत में बंधन को समझाया गया है ? (५.१)
- अ) द्वितीय अध्याय ब) तीसरा अध्याय क) चौथा अध्याय ड) पाँचवा अध्याय
 ३३३) सही शब्द चुनिए
 भक्ति में किए गए कार्य , कार्य से बेहतर हैं। (५.२)
- अ) आसक्ति ब) शमन क) वैराग्य ड) आकर्षण
 ३३४) सही शब्द चुनिए... (५.२)
 भक्तिमय कार्यसे बेहतर है।
- अ) शुष्क चिंतन ब) पश्चात कर्म क) संन्यास कर्म ड) आकर्षण
 ३३५) “कर्म” का अर्थ क्या है ? (५.२)
- अ) फल देनेवाले कार्य ब) अच्छे कार्य क) बुरे कार्य
 ख) इंद्रिय तृप्ति के लिए किये हुए कार्य
- ३३६) कब व्यक्ति का जीवन व्यर्थ रहता है ? (५.२)
- अ) जब तक वह दुसरो के सच्चे स्वरूप के बारे में पूछताछ करता है
 ब) जब वह अपने सत्य स्वरूप के बारे में पूछताछ कहता है
 क) जब वह अपने सत्य स्वरूप के बारे में कोई पूछताछ नहीं करता
 ड) सदैव
- ३३७) भौतिक बंधन का मूल कारण क्या है? (५.२)
- अ) कामनाएँ ब) कर्म क) मित्र ड) भौतिक जगत
- ३३८) सही जोड़ी बनाइए (५.१)
- | | |
|---|--|
| १) आत्मा और भौतिक बंधन का प्राथमिक ज्ञान
२) ज्ञानवस्था में स्थित व्यक्ति का कोई कार्य करने की आवश्यकता नहीं है
३) सभी यज्ञों की पूर्ति दिव्य ज्ञान से होती है | अ) चतुर्थ अध्याय
ब) द्वितीय अध्याय
क) तृतीय अध्याय |
|---|--|

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३३९) ज्ञान का अर्थ क्या है ? (भ.ग.५.२)
- अ) जानना कि हम आत्मा नहीं, भौतिक शरीर हैं
ब) जानना कि हम भौतिक देह नहीं अपितु मन हैं
क) जानना कि हम भौतिक देह नहीं अपितु आत्मा हैं
ड) जानना कि हम मन नहीं अपितु बुद्धि हैं
- ३४०) कौनसे वाक्य असत्य है ? (५.२)
- अ) मुक्ति के लिए ज्ञान पर्याप्त है ब) मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है
क) मुक्ति के लिए ज्ञान पर्याप्त नहीं है ड) मुक्ति के लिए ज्ञान होना ही चाहिए
अ) १.२.३ ब) १.२.३.४ क) २.३.४ ड) १.२.४
- ३४१) किसने किससे कहा ? (५.३)
- “जो अपने कर्म के फलों को न चाहता है न द्वेष करता है,
वही नित्य संन्यासी है”
- अ) कृष्ण ने अर्जुन से ब) अर्जुन ने कृष्ण से
क) संजय ने धृष्टराष्ट्र से ड) कृष्ण ने युधिष्ठिर से
- ३४२) कृष्ण से ऐक्य की धारणा गलत है क्यों कि (५.३)
- अ) अंग पूरे में समान है ब) अंग पूरे के समान नहीं हो सकता
क) अंग पूरे से समान हो सकता है ड) ऊपर में से कोई नहीं
- ३४३) वह ज्ञान जो गुणात्मक रूप से एक अपितु मात्रा में भिन्न है (५.३)
- अ) सही दिव्य ज्ञान है ब) असत्य दिव्य ज्ञान है
क) सही भौतिक ज्ञान है ड) गलत भौतिक ज्ञान है
- ३४४) जो पूर्णरूप से है वह नित्य संन्यासी है क्योंकि वह अपने
कर्मों के फल को न चाहता है न तो द्वेष करता है । (५.३)
- अ) भौतिक भावनाभावित ब) माया भावनाभावित क) कृष्णभावनाभावित
ड) देहात्मक बुद्धि से ग्रसित

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३४५) जब व्यक्ति कृष्ण भावनाभावित है ,जब(५.३)
अ) द्वैतो की जगह द्वंद्व प्रयोग करें ब) जीवन के द्वैत से मुक्त है.
क) उसे कभी भी मुक्ति नहीं मिलती ड)वह कभी भी भौतिक जगत में संतुष्ट है
- ३४६) भक्तिमय सेवा.....है ? (५.४)
अ) ज्ञान योग ब) धर्मयोग क) कर्म योग ख) अष्टांग योग
- ३४७) भौतिक जगत के विश्लेषण का उद्देश्यहै।(५.४)
अ) आत्मा को जानना है ब) रसायनों को जानना है
क) भूत को जानना है ड) कुछ भी जानना नहीं है
- ३४८) विश्वात्माहै। (भ.ग. ५.४)
अ) विष्णु ब) शिव क) गणेश ड) इंद्र
- ३४९) सांख्य सिद्धांत के सच्चे शिष्य कौनसे दो कार्य करते हैं?.....(५.४)
अ) भौतिक जगत के मूल विष्णु को न जानकर , उनकी सेवा नहीं करते
ब) विष्णु को भौतिक जगत के मूलरूप में जानकर उनकी सेवा में संलग्न होते हैं
क) भौतिक जगत मूल विष्णु को जानकर , उनकी सेवा में लगते हैं
ड) भौतिक जगत के मूल को जानकर , देश की सेवा में लगते हैं
- ३५०) सांख्ययोग एवं कर्मयोग में कोई अंतर नहीं है.. (५.४)
अ) दोनो का उद्देश्य भौतिक जगत का लाभ उठाना है
ब) दोनो का उद्देश्य भौतिक जगत का विश्लेषण है
क) दोनो का उद्देश्य भगवान विष्णुजी अथवा कृष्ण है
ड) दोनों का उद्देश्य (माधव) मानव सेवा है
- ३५१) मात्रही भक्तिमय सेवा को सांख्य योग से भिन्न मानते हैं।(५.४)
अ) सुकृत ब) भक्त क) ज्ञानी ड) अज्ञानी

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३५२) “जड को सींचने” की क्रिया का वर्णन क्या है ? (५.४)
 अ) भौतिक जगत का विश्लेषण ब) भगवान कृष्ण की भक्ति
 क) कर्म कण्ड प्रणाली ड) अपने परिवार /राष्ट्र की सेवा
- ३५३) सत्य /असत्य बताइए (५.५)
 सांख्ययोग से प्राप्त स्थान भक्तिमय सेवा से भी प्राप्त हो सकता है
 अ) सत्य ब) कभी असत्य क) असत्य
- ३५४) मीमांसिक खोज का सच्चा उद्देश्य जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति है (५.५)
 अ) असत्य ब) सत्य क) असत्य हो सकता है ड) कभी सत्य कभी असत्य
- ३५५) क्योंकि जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार है, सांख्ययोग एवं
 भगवान श्रीकृष्ण के भक्तियोग से भिन्न परिणाम प्राप्त है.. (५.५)
 अ) सत्य ब) सत्य हो सकता है क) असत्य ड) कभी सत्य कभी असत्य
- ३५६) सांख्य—मिमांसा की खोज की सीख यह है कि... (५.५)
 अ) जीवात्मा भौतिक जगत का अंग है
 ब) जीवात्मा भौतिकजगत का नहीं अपितु परमात्मा का अंग है
 क) जीवात्मा भौतिक जगत एवं परम सत्य दोनों का अंग है
 ड) जीवात्मा न तो भौतिक जगत का न परम आत्मा का अंग है
- ३५७) जब व्यक्ति कृष्ण भावनामृत में कार्य करता है , तब वह अपनी....
 में होता है(५.५)
 अ) बद्ध स्थिति ब) स्वाभाविक
 क) बद्ध एवं सामान्य स्थितिमें ड) सामाजिक स्थिति
- ३५८) सही जोड़ी बनाइए (५.५)
 अ ब
 अ) पदार्थ से विरक्त बनना है अ) य पश्यति स पश्यति
 ब) कृष्णभावनामृत कार्या से आसक्ति बढ़ाना है ब) सांख्य
 क) पदार्थ से विरक्ति और क) भक्ति योग प्रणाली
 कृष्ण से आसक्ति एक ही है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) २-(क), २-(अ), ३-(ब) ब) २-(अ), २-(ब), ३-(क)
 क) २-(ब), २-(क), ३-(अ), ख) २-(ब), २-(अ), ३-(क),
 ३६०) सबसे भिन्न को चुनिए.... (५.६)
 अ) मात्र सभी कार्यों के संन्यास से व्यक्ति संतुष्ट नहीं हो सकता
 ब) एक बुद्धिमान व्यक्ति कभी भक्ति में भाग नहीं लेता
 क) मात्र भगवान की भक्ति ही व्यक्ति को संतुष्ट कर सकती है
 ड) समस्त कार्य छोड़कर केवल भक्ति करना किसीको प्रसन्न नहीं रख सकता
 ३६१) सबसे भिन्न को चुनिए ... (५.६)
 अ) वैष्णव संन्यासी भागवतम् के अध्ययन में संलग्न है, जो वेदांत सूत्र पर स्वाभाविक भाष्य है
 ब) मायावादी संन्यासी सांख्य —मीमांसा एवं शुष्क चिंतन में लगे हुए है
 क) मायावादी संन्यासी वेदांत सूत्रों को भी पढ़ते है , एवं शंकराचार्य कृत शारीरिक भाष्य का अध्ययन करते है
 ड) मायावाद संप्रदाय के शिष्य भगवान की भक्ति में संलग्न है
 ३६२) सांख्य एवं वेदांत अध्ययन एवं शुष्क चिंतन में लगे मायावादी संन्यासी , भगवान कीको नहीं चख सकते ।(५.६)
 अ) भौतिक सेवा ब) दिव्य सेवा क) सामाजिक सेवा ड) हेतुमयी सेवा
 ३६३) किस कारणवश मायावादी ब्रह्म—चिंतन से थक ,कई बार समझ के बिना शरण ग्रहण करते है (५.६)
 अ) शास्त्रों का अल्प अध्ययन ब) मीमांसा का गहन अध्ययन
 क) शीघ्र अध्ययन ड) सही अध्ययन
 ३६४) भक्तिमय सेवा में संलग्न वैष्णव संन्यासी के बारे में कौनसी बात पक्की है ? (५.६)
 अ) पतन ब) शुष्क मानसिक चिंतन
 क) भगवद्धाम की प्राप्ति ड)ब्रह्म की प्राप्ति

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३६५) कौनसे वाक्य सत्य है ? (५.७)
- अ) जो व्यक्ति भक्तिमय कार्य करता है ,जो शुद्ध आत्मा है ,जो मन एवं इन्द्रियों को नियंत्रण करता है , सभी को प्रिय है और वह सभी को प्रिय है
- ब) कृष्णभावनामृत के द्वारा मुक्ति के पथपर स्थित व्यक्ति सभी जीवों को प्रिय है एवं सभी जीव उसे प्रिय है
- क) एक कृष्णभावनाभावि व्यक्ति किसी भी जीव को कृष्ण से भिन्न नहीं मानता , जिस प्रकार वृक्ष के पत्ते एवं शाखाएँ वृक्ष से अभिन्न हैं .
अ) १,२ ब) २,३ क) १,२,३ ड) ४, ३
- ३६६) कृष्ण भावनामृत व्यक्ति सभी को प्रिय हैं क्यों कि(५.७)
- अ) वह सभी का दास है ब) वह सभी का स्वामी है क) वह सभी का मित्र है
ड) वह सभी का भ्राता है
- ३६७) सही स्थानों की जोड़ी बनाएँ
“जो व्यक्ति भक्तिमय कार्य करता है ,जो मन एवं इन्द्रियों को नियंत्रण रखता है , सभी को प्रिय है एवं सभी उसे प्रिय हैं..... (५.७)
अ _____ ब _____
- १) सभी उसके कार्य संतुष्ट है अ) मनपूर्ण रूपसे नियंत्रित है
२) शुद्ध चेतना है ब) कृष्ण से दूर होने की कोई संभावना नहीं
३) मन पूर्ण रूप से नियंत्रित है क) शुद्ध चेतना में है
४) मन कृष्ण पर एकाग्र है ड) इन्द्रिय संयमित है
- अ) २-(क), २-(अ) , ३-(ड) , ४-(ब)
ब) २-(अ), २-(क), ३-(ड) , ४-(क)
क) २-(क), २-(अ), ३-(ब), ४-(ब) ड) २-(ब), २-(अ), ३-(क),
ड) २-(ब), २-(अ), ३-(क), ४- (क)
- ३६८ जितेंद्रिय व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के प्रतिनहीं हो सकता (५.८)
- अ) कृतज्ञ ब) आदर – भाव क) करूणामय ड) अपराधी /कष्टप्रद

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३६९) कृष्णभावनाभावित व्यक्ति.....के अलावा किसी भी विषय को सुनना नहीं चाहता(५.८)
- अ) असुर ब) भौतिक जगत क) स्वयं के परिवार ड) कृष्ण
- ३७०) यदि कोई यह बहस करता है कि “अर्जुन युद्ध में दूसरों को कष्ट दे रहा था। क्या वह कृष्णभावनाभावित नहीं था? उसका क्या कारण देंगे? (५.७)
- १) यह सत्य है कि अर्जुन युद्ध में अपराधी था परंतु हमें यह समझना चाहिए की क्योंकि कुरु सभा में उनकी पत्नी का तिरस्कार हुआ वह अधर्म के विरोध में सही कार्य कर रहा था
- २) अर्जुन बाह्य रूप से अपराधी था क्यों कि (जैसा कि भगवद् गीता के द्वितीय अध्याय में समझाया गया है) युद्धस्थल पर सम्मिलित सभी योद्धा व्यक्तिगत रूप से जीवित रहेंगे, क्योंकि आत्मा को मारा नहीं जा सकता.
- ३) आध्यत्मिक रूप से कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल पर कोई भी मारा नहीं गया था मात्र कृष्ण की आज्ञानुसार उनके वस्त्रों को बदला गया। इसलिए, यद्यपि अर्जुन कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल पर लड़ रहा था, वह सचमुच नहीं लड़ रहा था, अपितु पूर्ण कृष्णभावनामृत में कृष्ण की आज्ञाओं को पालन कर रहा था।
- ४) वस्तुतः यह व्यक्ति के उपर आधारित है यदि हम अपनी दृष्टि से देखें तो अर्जुन दोषी था, पर चूँकि अपनी समझ में सही था, इसलिए निर्दोष था।
अ) १, ४ ब) २, ३ क) ३ ड) ४
- ३७१) संदर्भ : ऐसा व्यक्ति किसी भी जीव को कृष्ण से भिन्न नहीं देख सकता, जिस प्रकार से, पत्ते और शाखा वृक्ष से भिन्न नहीं होते किन्तु व्यक्ति की चर्चा हो रही है ? (५.७)
- अ) भौतिक चेतनावाले व्यक्ति ब) देहात्मबुद्धि वाले व्यक्ति की
- क) कृष्ण भावनाभावित व्यक्ति की ड) लौकिक बुद्धिवाले व्यक्ति की
- ३७२) रिक्त स्थानों की पूर्ण कीजिए (५.७)
- जो व्यक्तिसे कार्य करता है, जो विशुद्धात्मा है, एवं जो अपनेऔरको नियंत्रित करता है, सभी को प्रिय है और सभी उसे प्रिय है। यद्यपि वह सदैव कार्य करता है, वह कभी भी बद्ध नहीं होता।”

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) मन, भक्ति, इंद्रिय ब) भक्ति, बुद्धि, मन क) बुद्धि, इंद्रिय, मन
 ड) भक्ति, मन इंद्रिय
- ३७३) भिन्न की चुनाव कीजिए (५.८.९)
 पाँच मुख्य एवं गौण कारण हैं.....
- अ) कर्ता, कार्य, परिस्थिती, प्रयत्न एवं भाग्य
 ब) कर्ता, कर्म, अधिष्ठान, प्रयास तथा भाग्य
 क) कर्ता, कार्य, भक्ति, स्वास्थ्य, भाग्य
 ड) कर्ता, कार्य, भक्ति, स्थिति, श्रद्धा भाग्य
- ३७४) “कृष्ण भावनाभावित व्यक्ति अपने सत्व में शुद्ध है, अतः :
 उसे ऐसा कोई कार्य नहीं करना पड़ता जो इन पाँच
 मुख्य एवं गौण कारणों पर आधारित है, क्यों कि (५.८.९)
- अ) वह भौतिक चेतना में है
 ब) क्योंकि वह माया कि दिव्य प्रेम भक्ति में संलग्न
 क) क्योंकि वह इंद्रिय तृप्ति में व्यस्त है
 ड) क्यों कि वह कृष्ण की दिव्य प्रेमभक्ति में संलग्न है
- ३७५) कृष्णभावनाभावित व्यक्ति की वास्तविक स्थिति क्या है,
 वह सदैव किसके बारे में चिंतन करता है ... (५.८)
- अ) इंद्रिय तृप्ति ब) बद्ध धर्म क) आध्यत्मिक कार्य/सेवा ड) भौतिक कार्य
- ३७६) वाक्य पूर्ण कीजिए (५.८/९)
 भौतिक चेतना में इंद्रिय इंद्रिय तृप्ति में लगे रहते हैं, जब कि
 कृष्णभावानामृत में इंद्रिय, कृष्ण की इंद्रियों की.....में लगे रहते हैं।
- अ) दुरुपयोग ब) तुष्टी क) विश्लेषण ड) अध्ययन
- ३७७) “इंद्रियों के कार्य” (५.८/९)
- | | |
|----------------------|-------------------|
| ड | इ |
| अ) देखना एवं सुनना | १) कार्य के लिए |
| ब) चलना, कहना छोड़ना | २) ज्ञान प्राप्ति |

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) A-२, B-२ ब) A-२, B-१
 क) A-२, A-१&२ ड) A-१, B-२
 ३७८) व्यक्ति के गुण को पहचानिए :
 “व्यक्ति कभी भी इंद्रियों के कार्यों से प्रभावित नहीं है”
 अ) कृष्णभावनाभावित ब) दान क) इंद्रिय तृप्ति ड) दुरुपयोग
 ३७९) सत्य / असत्य
 एक कृष्णभावनाभावित व्यक्ति भगवान की सेवा से भिन्न
 दूसरा कोई भी कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि वह
 जानता है की, वह भगवान का नित्य स्वामी है ।
 अ) सत्य ब) असत्य
 क) असत्य (स्वामी—दास) ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
 ३८०) श्री भगवान समझाते हैं की अष्टांग योग पद्धति
 के नियंत्रण करने के लिए है । (६.१)
 अ) मन और इंद्रिय ब) शरीर क) श्वास ड) शरीर के अष्टांगयोग
 ३८१) सभी जीव भगवान कृष्ण के अंग हैं । उनका धर्म है कि (६.१)
 अ) वे कृष्ण से एक हो जाएं ब) कृष्णभावनामृत में कार्य करें
 क) अपने परिवार के लिए कार्य करें ड) अपने कर्म का फल भोगे
 ३८२) कौन पूर्ण संन्यासी / योगी है , (६.१)
 अ) जो निजी संतोष के लिए कार्य करता है
 ब) जो हिमालय जाता है
 क) जो परम पूर्ण परमसत्य की संतुष्टि के लिए कार्य करता है
 ड) जो पूर्ण परम बनने का प्रयत्न करता है
 ३८३) निर्विशेष ब्रह्म से सायुज्य की कामना (६.१)
 अ) स्वार्थ है ब) सभी भौतिक कामनाओं से परे है
 क) दोनों अ और ब ड) निस्वार्थ है

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३८४) योग अर्थात (६.३)
अ) शारीरिक क्रिया ब) परम बनना
क) परमेश्वर से युक्त ड) ध्यान

३८५) व्यक्ति कभी भी योगी नहीं बन सकता जब तक वह
का त्याग नहीं करता।(६.४)
अ) परिवार एवं संबंधियों ब) गृह एवं नगर
क) सभी सुखों ड) इंद्रिय तृप्ति की कामना

३८६) योग प्रणाली की सीढ़ी को ३ भागों में बाँटा गया है (६.३)
अ) ज्ञानयोग, ध्यानयोग ,कर्मयोग ब) ज्ञानयोग, कर्मयोग,भक्तियोग
क) ध्यानयोग ,कर्मयोग,भक्तियोग ड) ज्ञानयोग, ध्यानयोग ,भक्तियोग

३८७) कृष्णभावनाभावित व्यक्ति को सभी भौतिक क्रियाओं से मुक्त माना जाना चाहिए क्योंकि (६.३)
अ) वह नित्य रूपसे कृष्ण की सेवामें लगा हुआ है
ब) वह ध्यान का अभ्यास कर रहा है ,
क) वहा यज्ञ—कार्य कर रहा है
ड) वह कोई भी कार्य नहीं कर रहा है

३८८) ही मनुष्य के लिए , बंधन एवं मुक्ति दोनों का कारण है (६.५)
अ) मन ब) अहंकार क) बुद्धि ड) विभाग की शक्ती

३८९) तीर्थस्थान का अर्थ है (६.११.१२)
अ) यात्रा स्थल ब) पवित्र स्थल
क) सत्त्व— स्थित स्थल ड) देवताओं का स्थल

३९०) जब जनता अल्पायु है , अध्यात्मिक साक्षात्कार में मन्द है ,सदैव विभिन्न रूपों से चिन्तित है , तब आध्यत्मिक साक्षात्कार की श्रेष्ठ प्रणाली.....है (६.११.१२)
अ) यज्ञ ब) अर्चना क) पवित्र नाम का कीर्तन ड) ध्यान

३९१) जीवन का उद्देश्यको जानना है।(६.१३.१४)
अ) कृष्ण ब) आत्मा क) अपने स्वस्थ का समाधान ड) सुख

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ३९२) योग प्रणालीके साक्षात्कार के लिए है। (६.१३.१४)
 अ) अच्छा स्वस्थ ब) विष्णु
 क) धन, सुंदरी, पूजा एवं प्रतिष्ठा ड) समय व्यर्थ करना
- ३९३) ब्रम्हचर्य के अभ्यास के बिना, कोई भी किस योग में प्रगति नहीं कर सकता। (६.१४)
 अ) ध्यान ब) ज्ञान क) भक्ति ड) ऊपर के सभी
- ३९४) आध्यात्मिक जगत के सभी गृहहैं (६.१५)
 अ) सूर्य से ब) चंद्र से क) पावक / विद्युत से ड) स्वयं प्रकाशित
- ३९५) कौन योगी नहीं बन सकता। (६.१६)
 अ) जो ज्यादा आहार ग्रहण करता है ब) अल्पआहार ग्रहण करता है।
 क) अधिक निद्रा लेता है ड) ऊपर के सभी
- ३९६) माँस, मदिरा, नशा यह सभीगुण के व्यक्तियों के लिए है। (६.१६)
 अ) तामसिक भ) राजसी क) सात्विक ड) ऊपर में से कोई नहीं
- ३९७) प्रगति के दो कौनसे मार्ग हैं (६.३८)
 अ) प्रवृत्ति ब) निवृत्ति क) दोनों ड) कोई भी नहीं
- ३९८) भौतिकवादी ज्यादाके लिए उत्सुक है। (६.३८)
 अ) भौतिक विकास ब) आर्थिक विकास
 क) उच्च ग्रहों की यात्रा ड) ऊपर के सभी
- ३९९) यदि एक ब्रह्मवादी पतित होता है तो..... (६.३८)
 अ) बाह्य रूपसे वह दोनो भौतिक और आध्यात्मिक सुख को प्राप्त नहीं कर सकता।
 ब) वस्तुतः वह भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख को भोग नहीं सकता
 क) वह आध्यात्मिक सुख को अनुभव करता है परंतु भौतिक सुख से छूट जाता है।
 ड) वह भौतिक सुख को अनुभव करता है परंतु आध्यात्मिक सुख खो देता है।
- ४००) एक सफल योगी कौन है (६.३८)
 अ) कृष्ण के प्रति पूर्ण रूप से शरणागत
 ब) जो अपने हृदय में परमात्मा को देख सकता है
 क) जो ब्रम्हज्योति से सायुज्य को प्राप्त करता है
 ख) ऊपर के सभी

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४०१) दिव्य साक्षात्कार की श्रेष्ठ एवं प्रत्यक्ष विधि
भक्तियोग अथवा कृष्णभावनामुत्त है (६.३८)
अ) सत्य ब) असत्य
- ४०२) मुक्ति के पश्चात् जीवात्मा अपने व्यक्तित्व को बनाए रखता है.....
अ) सत्य ब) असत्य
- ४०३) कौन वस्तुतः तत्त्ववेत्ता हो सकता है?
अ) कृष्ण ब) कृष्णभक्त क) दोनों ड) कोई भी नहीं
- ४०४) गोलोक कौन पहुँच सकता है(६.१५)
अ) भौतिक जगत के ज्ञान से पूर्ण वैज्ञानिक
ब) सिद्धियों से पूर्ण योगी क) कृष्ण के बारेमें पूर्ण ज्ञानी ड) सभी
- ४०५) योग प्रणाली से सभी भौतिक कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए हमें.....
होना चाहिए (६.१७)
अ) आहार में युक्त ब) विहार में युक्त क) निद्रायुक्त ड) ऊपर के सभी
- ४०६) कौन पाप नहीं भोगता ? (६.१६)
अ) जो मात्र आत्मेन्द्रियों की तृप्ति के लिए बनता एवं खाता है
ब) जो कृष्ण को अर्पण कर ग्रहण करता है
क) शाकाहारी भोजन हमेशा पाप से मुक्त होता है
ड) जो सदैव ही अस्वच्छ एवं मैला भोजन करता है
- ४०७) भगवद्गीता के अनुसार हमें कितनी निद्रा की आवश्यकता है? (६.१६)
अ) २ घंटे ब) ४ घंटे क) ६ घंटे ड) ८ घंटे
- ४०८) भोजन/आहार को कैसे नियंत्रित किया जा सकता है ? (६.१६)
अ) मात्र कृष्णप्रसाद को ग्रहण कर ब) वह स्वयं ही नियंत्रित हो जाएगी जब हम अपने इच्छानुसार ग्रहण करें
क) शारीरिक प्रशिक्षक के निर्देशानुसार कड़ा उपवास करना
ड) वह कभी भी नियंत्रित नहीं हो सकता
- ४०९) श्रील रूपगोस्वामी कितना समय निद्रा लेते थे ? (६.१७)
अ) २ घंटे ब) ४ घंटे क) ६ घंटे ड) ८ घंटे

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४१०) किस प्रकार से योगी सभी भौतिक कामनाओं से मुक्त होकर पुर्णतः योगमें स्थित हो सकता है ? (६.१८)
- अ) योगाभ्यास से ब) अपने सभी मानसिक कार्यों को अनुशासित कर
- क) दिव्यत्व में स्वयं को स्थापित करके ड) ऊपर के सभी
- ४११) योग में पूर्ण सिद्धिके लिए अम्बरिष महाराज किस प्रकार अपने वादों का उपयोग करते थे..... (६.१८)
- अ) श्री हरि के दर्शन के लिए मंदिर जाकर ब) अपने दास को लात मारकर
- क) अपराधियों के पीछे दौड़कर ड) ऊपर के सभी
- ४१२) ब्रम्ह/दिव्यत्व की प्राप्ति का सुलभ एवं पूर्ण प्रणाली क्या है... (६.१८)
- अ) मन एवं इंद्रियो को सदैव श्रीभगवान की सेवा में संलग्न करना
- ब) योग शिक्षा लेना
- क) हिमालय जाकर एकान्त स्थल में योगाभ्यास करना
- ड) किसी भी प्रणाली को अपना सकते हैं
- ४१३) क्या उदाहरण दिया गया है “योगी जिसका मन सदैव नियंत्रित है, सदैव ही ध्यान में स्थित रहता है (६.१९)
- अ) दीप और वायु ब) बल्ब एवं पंखा क) दीप और पंखा ड) सूर्य और वायू
- ४१४) समाधिस्थ व्यक्ति के लक्षण क्या है (६.२०.२३)
- अ) आत्मा में रमण कर आनंद लेता है
- ब) वह नहीं मानता कि इससे दुसरा कोई आनंद होगा
- क) सभी भौतिक क्लमषोसे मुक्त ड) ऊपर के सभी
- ४१५) कुछ अनभिज्ञ टिप्पणीकार आत्मा एवं परमात्मा को जोड़ने का प्रयत्न करते हैं और मायावादी इसे ही मुक्ति मानते हैं। क्या यह पतंजली योग प्रणाली का लक्ष्य है ? (६.२०.२३)
- अ) सत्य ब) असत्य

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४१६) दिव्य इंद्रियों के नियंत्रण से ही होती है। निम्नलिखित वाक्य(६.२०.२३)
- अ) पतंजली द्वारा स्वीकृत है परंतु भगवद्गीता में नहीं है
- ब) भगवद्गीता में स्वीकृत है परंतु पतंजली मुनी के द्वारा नहीं
- क) दोनों के द्वारा स्वीकृत
- ड) न पतंजली मुनि न भगवद्गीता में स्वीकृत है.
- ४१७) पतंजली के अनुसार “कैवल्यम” है “भगवान से ऐक्य”(६.२०.२३)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४१८) मुक्ति /निर्वाण वास्तव में मन का शुद्धिकरण है..... (६.२०.२३)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४१९) निर्वाण के पश्चातका दर्शन होता है(६.२०.२३)
- अ) आध्यत्मिक कार्य ब) ध्यानयोग क) कर्मयोग
- ड) भगवान बनकर अस्तित्व की समाप्ति
- ४२०) भौतिक सृष्टि से मुक्ति का अर्थ यह नहीं है (६.२०.२३)
- अ) जीव के निज स्वरूप का नाश ब) ब्रह्म—सायुज्य एवं अस्तित्व की समाप्ति
- क) मृत्यु ड) ऊपर के सभी
- ४२१)जीवन का अंतिम लक्ष्य है औरउसका श्रेष्ठ साधन है(६.२०.२३)
- अ) दिव्य आनंद ,भक्तियोग ब) अच्छा स्वास्थ्य, योग
- क) दिव्य आनंद ,ध्यानयोग ड)मुक्ति , ध्यान योग
- ४२२) समप्रज्ञता समाधि का अर्थ है (६. २३)
- अ) मिमांसिक संशोधन से समाधि में स्थित होना
- ब) हिमालय जैसे एकांत स्थल में जाकर अथवा भूतल में ध्यान करना
- क) किसी से कुछ भी बात न करना ड) ऊपर में से कुछ भी नहीं.
- ४२३) असमप्रज्ञता समाधि का अर्थ है..... (६.२३)
- अ) मिमांसिक संशोधन से समाधि में स्थित होना
- ब) हिमालय जैसे एकान्तस्थ जाकर अथवा भूतल में ध्यान करना
- क) किसी से कुछ भी बात न करना
- ड) भौतिक सुख से दूर रहना

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४२४) कौनसी योग पद्धति सुलभ है एवं भ्रमित नहीं करती (६. २४)
 अ) ध्यानयोग ब) कर्मयोग क) हठयोग ड) ज्ञानयोग
- ४२५) हमे योगाभ्यास को.....एवके साथ कर
 कभी भी विचलित होना नहीं चाहिए। (६. २४)
 अ) दृढता, उत्साह ब) दृढता, श्रद्धा क) उत्साह, श्रद्धा ड) ऊपर में कोई भी नहीं
- ४२६) भगवद्गीता में दृढता के उदाहरणरूप में किस पक्षी का उल्लेख है (६. २४)
 अ) चिड़िया ब) बाज क) कौआ ड) कोयल
- ४२७) समुद्र में डूबती हुई चिड़ियाँ को कौन बचाने आया? (६. २४)
 अ) विष्णु ब) गरुड क) हनुमान ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- ४२८) यदि कोई भक्तियोग के सिद्धांतों का महान दृढता से
 पालन करता है (६. २४)
 अ) भगवान आ सकते हैं अथवा नहीं आसकते हैं मदद के लिए
 ब) श्री.भगवान नहीं आयेंगे क्योंकि वे जगत के परिपालन में व्यस्त हैं
 क) अवश्य ही भगवान मदद के लिए आयेंगे
 ख) व्यक्ति को भगवान से किसी भी मदद की आवश्यकता ही नहीं
 रहेंगी यदि वह दृढता से योग करता है
- ४२९) प्रत्याहार का अर्थ है.... (६. २५)
 अ) पुर्ण सीमा तक इंद्रिय तृप्ति करना ब) नियमित रूप से इंद्रिय तृप्ति करना
 क) इंद्रियों को बहुत कम मात्रा में भोग कराना
 ड) धीरे से सर्व इंद्रिय के कार्यों को रोक देना
- ४३०) मन को नियंत्रित किया जा सकता है और समाधि में लगाया जा सकता
 है (६. २५)
 अ) विश्वास ब) ध्यान से क) इंद्रिय से निवृत्ति ड) ऊपर के सभी
- ४३१) समाधि सरलता से प्राप्त की जा सकती हैके अभ्यास से (६. २५)
 अ) कृष्णभावनामृत ब) ध्यान क) इंद्रिय तृप्ति ड) ऊपर के सभी
- ४३२) मन का स्वभावएवंहै। (६. २६)
 अ) चंचल , अस्थिर ब) शांत , स्थिर क) चंचल , स्थिर ड) शांत, अस्थिर

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४३३) यदि मन भ्रमण करता है , तो उसे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? (६. २६)
- अ) उसे छुड़ाकर वापस लाना है
 ब) मन को भ्रमण करने दो और जब वह थक जाएगा तब वापस आ जाएगा
 क) मन को किसी भी रूपसे नियंत्रित किया जा सकता
 ड) दोनों अ और ब सही है
- ४३४) जो मनद्वारा नियंत्रित है वहहै , और जो मन को नियंत्रण करता है , उसेकहते हैं। (६. २६)
- अ) गो-दास , गो-स्वामी ब) गो-स्वामी, गो-दास
 क) स्वामी , गो-दास , ड) ऊपर के सभी
- ४३५) दिव्य इंद्रिय सुख में , इंद्रियाँकी सेवा में संलग्न हैं। (६. २६)
- अ) आत्मा ब) हृषिकेश क) माता-पिता ड) मित्र , शिक्षक एवं राष्ट्र
- ४३६) इंद्रियों को नियंत्रण में लाने की श्रेष्ठ पद्धति क्या है। (६. २६)
- अ) इंद्रियों को कृष्ण की सेवा में संलग्न करना
 ब) इंद्रियों को उपयोग से रोकना
 क) इंद्रियों को पूर्ण रूप से भोग करना (पूर्ण तृप्ति)
 ड) कोई भी मार्ग नहीं वश में करने के लिए
- ४३७) किस प्रकार का योगी पूर्व कर्मों के सभी फल से मुक्त है (६. २७)
- अ) जिसका मन कृष्ण पर स्थिर है ब) जिसका मन स्वयं पर स्थिर है
 क) जिसका मन इंद्रिय पदार्थों पर स्थिर है ड) जिसका मन प्रकाश ज्योति पर स्थिर है
- ४३८)योगी सतत योगाभ्यास में लगकर भौतिक क्लेशों से मुक्त होकर श्रीभगवान की दिव्य प्रेमाभक्ति के श्रेष्ठस्तर को प्राप्त करता है। (६. २८)
- अ) आत्म-संयमी ब) दृढ क) निश्चयी ड) ऊपर के सभी
- ४३९) आत्मसाक्षात्कार का अर्थ है भगवान के संबंध में अपनी स्वाभाविक स्थिति का ज्ञान होना (६. २८)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४४०) जीवात्मा परमात्मा के समान है , परंतु उसका अंग नहीं है (६. २८)
- अ) सत्य ब) झूठ

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४४१) ब्रम्ह-संस्पर्श का अर्थ है (६. २८)
- अ) परम भगवान का स्पर्श ब) ब्रम्ह के साथ सानिध्य
क) परम ब्रम्ह में सायुज्य ड) निरर्थक
- ४४२) एक सच्चा योगी कृष्ण को सभी.....में एवं सभी.....को कृष्ण
में स्थित देखता है। अवलोकन करता है। (६. २९)
- अ) जीवों ब) मानवों क) पशुओं ड) ऊपर में से कोई भी नहीं
- ४४३) किस रूप में श्रीभगवान सभी जीवों में स्थित है (६. २९)
- अ) कृष्ण ब) परमात्मा क) ब्रम्हज्योति ड)ऊपर के सभी
- ४४४) एककुत्ते और ब्राम्हण में श्री भगवान उपस्थित भौतिक रूप
से उन्हें प्रभावित करती है.... (६. २९)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४४५) जीवात्मा सभी जीवों के हृदय में स्थित है (६. २४)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४४६) जो जीवात्मा एवं परमात्मा का ऐक्य देखते हैं, वे (६. २१.२२.२३)
- अ) वस्तुतः योगाभ्यास में हैं
ब) वस्तुतः योगाभ्यास में नहीं हैं
क) इस अवलोकन का योग के साथ कोई भी संबंध नहीं है
ड) योगाभ्यास में हो सकता है अथवा नहीं
- ४४७) कौन कृष्ण को नहीं खो देता ? (६. ३०)
- अ) जो कृष्ण को सर्वत्र देखता है ब) जो कृष्ण में सभी को स्थित देखता है
क) दोनों ड) ऊपर में से कोई नहीं
- ४४८) “कृष्ण के बिनाकुछ भी नहीं रह सकता और कृष्ण सभी के ईश्वर हैं” यही
कृष्णभावनामृत का मूल सिद्धांत है..... (६. ३०)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४४९) कृष्ण भावनामृतका विकास है (६. ३०)
- अ) ध्यान शक्ति ब) कृष्णप्रेम क)भगवान में हमारे प्रेम ड)ऊपर में से कोई नहीं

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४५०) जब भक्त कृष्णप्रेम को विकसित करता है , जो मुक्ति से परे है , उस समय कौनसा वाक्य सत्य है..... (६. ३०)
- अ) भक्त कृष्ण से प्रेम करने में सक्षम हो जाता है
ब) भगवान और भक्त के बीच गहरा संबंध बन जात है
क) भगवान कभी अदृश्य नहीं है
ड) ऊपर के सभी
- ४५१) कृष्ण में सायुज्यहै (६. ३०)
- अ) मुक्ति ब) आध्यत्मिक सर्वनाश
क) जीवन की सिद्धि ड) ऊपर में से कोई सभी नहीं
- ४५२) ऐसा योगी , जो परमात्मा की भक्तिमय सेवा में संलग्न है , यह जानते हुए कि मैं एवं परमात्मा एक है , वह सदैव मेरे साथ रहता है” (६.३१)
- अनुवाद – इस भाषांतर में “मैं” का अर्थ है.....
- अ) कृष्ण ब) आत्मा क) प्रकाश ड) ऊपर के सभी
- ४५३) विष्णु अपनी चार भुजाओं मेंधरण किये हुए है। (६.३१)
- अ) गदा, चक्र, पद्म, कुछ भी नहीं ब) गदा ,चक्र,बाण ,कुछ भी नहीं
क) गदा , खड्ग , बाण ,शंख ड) गदा, चक्र , पद्म, शंख
- ४५४) योगी को जानना चाहिए कि(६.३१)
- अ) विष्णु कृष्ण से भिन्न हैं ब) विष्णु एवं कृष्ण एक ही हैं
क) सभी एक ही हैं ड) ऊपर के सभी
- ४५५) “कृष्णभावनाभावित योगी सभी कार्या में संलग्न होकर , भौतिक अस्तित्व में रहकर भी ,सदैव ही कृष्ण में स्थित है”, इसे किसने समर्थन दिया है....
- अ) श्रील सनातन गोस्वामी ब) श्रील रूप गोस्वामी क) श्रील जीव गोस्वामी
ड) श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी
- ४५६) कृष्ण भावनामृत योग में सर्वोच्च समाधि है..... (६.३१)
- अ) सत्य ब) असत्य

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४५७) “यद्यपिउपस्थित है” : (६.३१)
- अ) गोपाल तपनी उपनिषद ब) ईषोपनिषद क) कथोपनिषद ड)गीतोपनिषद
- ४५८) जो, अपनी आत्मा की तुलना में , सभी जीवों के सुख या दुख में उनके समत्व को देखता है वहहै। (६.३२)
- अ) सिद्ध योगी ब) आंशिक योगी क)अपूर्ण योगी ड) पूर्ण योगी
- ४५९) जीव के कष्ट का क्या कारण है..... (६.३२)
- अ) कृष्ण के साथ अपने संबंध को भूलना ब) खराब स्वास्थ्य क)दरिद्रता
ड) लोगों के साथ अच्छा संबंध न होना
- ४६०) सुख का कारण है..... (६.३२)
- अ) कृष्ण को मनुष्य के सभी कार्यों के भोक्ता के रूप में जानना
ब) सर्व लोको के महेश्वर के रूप में कृष्ण को जानना
क) सभी जीवों के श्रेष्ठ सुहृद के रूप में कृष्ण को जानना
ड) ऊपर के सभी
- ४६१) सिद्ध योगी यह जानता है की प्रकृति के गुणोंद्वारा बद्ध जीव कृष्ण के साथ अपना संबंध भूलने के कारणसे प्रभावित है(६.३२)
- अ) त्रिविध भौतिक क्लेश ब) सच्चे क्लेश
क) धन और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं ड) संबंध में समस्याओं
- ४६२) कौन सबका सच्चा सुहृद है ? (६.३२)
- अ) पाठशाला के मित्र क्योंकि वे असाइनमेंट एवं पढ़ाई में मदद करते हैं
ब) समाज सेवक क्योंकि वे भोजन , घर एवं धन प्रदान करते हैं
क) भक्त क्योंकि वे ‘कृष्ण’ प्रदान करते हैं
ड) कोई भी सभी का सच्चा मित्र नहीं है।
- ४६३) वह योगी सर्वश्रेष्ठ है जब वह स्वान्तः सुखाय सिद्धि नहीं पाना चाहता , बल्कि अन्य की भी सिद्धि के लिए प्रयत्न करता है..... (६.३२)
- अ) सत्य ब) असत्य

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४६४) जो योगी स्वयं की प्रगति के लिए एकांत स्थल में जाता है वह उतना पुर्ण नहीं होता जितना कि वह भक्त जो सभी को कृष्ण की ओर मोड़ता है (६.३२)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४६५) कृष्ण के द्वारा बताई गई योगपद्धती अर्जुन को अव्यावहारिक एवं असहनीय क्यों लगी (६.३३)
- अ) मन बड़ा चंचल एवं अस्थिर है ब) अर्जुन बहुत व्यस्त है
- क) अर्जुन में दृढता की कमी है ड) मन का नियंत्रण असंभव है
- ४६६) कलियुग में योगपद्धति क्यों मुश्किल है..... (६.३३)
- अ) यह कड़े संघर्ष का युग है
- ब) लोग अपने कार्यों में व्यस्त है
- क) टेक्नालॉजी के बढ़ने से, योग पद्धती की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी
- ड) ऊपर में से कोई नहीं
- ४६७) सही जोड़ी बनाएँ (६.३४)
- | | |
|---|--|
| <p>अ</p> <p>१. मन</p> <p>२. आत्मा</p> <p>३. इंद्रिय</p> <p>४. बुद्धि</p> <p>५. शरीर</p> | <p>ब</p> <p>अ) रथ</p> <p>ब) सारथी</p> <p>क) रथ संचालन के लिए लगाम</p> <p>ड) घोड़े</p> <p>ग) यात्री</p> |
|---|--|
- ४६८) मन के नियंत्रण के लिए सबसे सरल पद्धति क्या है (६.३५)
- अ) आलसी होकर बैठकर प्रकाश पर ध्यान करना
- ब) हरे कृष्ण महामंत्र का जाप
- क) क्रीडा खेलना
- ड) कुछ समय पश्चात , मन स्वयं ही नियंत्रित हो जाएगा
- ४६९) कृष्ण भावनामृत में , व्यक्ति भगवान की.....प्रकार की भक्तिमय सेवा में संलग्न होता है। (६.३५)
- अ) ७ ब) ८ क) ९ ड) १०
- ४७०) “परेशानु भव” का अर्थ (६.३५)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) भौतिक सुख ब)मानसिक चिंतन क) आध्यत्मिक तृप्ति ड) आध्यत्मिक चिंता
 ४७१) आध्यत्मिक आनंद की तुलना किससे की गई है..... (६.३५)
 अ) क्रीडा खेलने से उत्पन्न सुख से
 ब) चलचित्र देखने के सुख से
 क) तीव्र भूख में भोजन ग्रहण करने के आनंद से
 ड) मित्रों के साथ वार्तालाप करने के सुख से
 ४७२) रोगनिवारण के लिए कुशल वैद्य एवं योग्य आहार चाहिए ।
 उसी प्रकार पागल मन के निवारण के लिए , उचित पद्धति
 है.....और योग्य आहार है। (६.३६)
 अ) ध्यान /उबले हुए शाक भाजी ब) भगवान कृष्ण के दिव्य कार्यों
 का श्रवण/कृष्ण प्रसाद
 क) मन का कोई इलाज नहीं ड) ऊपर में से कोई नहीं
 ४७३) मन को नियंत्रण किए बिना योग्याभ्यास समय का अपव्यय है (६.३६)
 अ) सत्य ब) असत्य
 ४७४)व्यक्ति सरलता से योगाभ्यास की फलप्राप्ति कर लेता है, परंतु
कृष्णभावनाभावित बने बिना सफल नहीं बन सकता ।(६.३६)
 अ) योगाभ्यासी, कृष्णभावनाभावित ब) कृष्ण भावनाभावित, योगाभ्यासी
 क) सामान्य व्यक्ति, योग्याभ्यासी ड) योगाभ्यासी ,सामान्य व्यक्ति
 ४७५) आत्मसाक्षात्कार का मूल सिद्धांत यह जानना है कि, (६.३७)
 अ) जीवात्मा भौतिक शरीर नहीं है ।
 ब) भोग ही जीवन का लक्ष्य है
 क) राष्ट्र सेवा ही परम उद्देश्य है
 ड) शरीर और मन को साथ रखने का ज्ञान
 ४७६) आत्मसाक्षात्कारके पथ से साध्य हैं (६.३७)
 अ) ज्ञान ब) अष्टांग योग क) भक्तियोग ड) ऊपर के सभी
 ४७७) इस युग में भगवद् साक्षात्कार के लिए सबसे योग्य पद्धति कौनसी है
 (६.३७)

भगवद्गीता प्रश्नावली

- अ) ज्ञान का पथ ब) अष्टांग योग का पथ क) भक्ति योग ड) सभी
- ४७८) एक योगी कल्याण कार्यों में संलग्न, है तो कौनसा वाक्य सत्य है (६.४०)
- अ) दोनों कुछ भी लाभ नहीं प्राप्त करेंगे
 ब) योगी के लिए भौतिक एवं आध्यत्मिक रूपसे नुकसान
 क) उसका न तो इस लोकमें और न परलोकमें ही विनाश होता है
 ड) अवश्य ही शुभ परिणाम प्राप्त होंगे, यद्यपि वह कृष्णभावनाभावित नहीं है
- ४७९) जीवन में प्रगति करने के लिएमें श्रद्धा होना आवश्यक है। (६.३७)
- अ) वैज्ञानिक उपलब्धि ब) शास्त्रों क) इंद्रिय तृप्ति ड) आत्मा/स्वयं
- ४८०) मात्र कृष्ण भावनाभावित कार्य ही शुभ है क्योंकि (६.४०)
- अ) वह व्यक्ति को मुक्ति एवं आत्मसाक्षात्कार की ओर ले चलते है
 ब) अच्छे जन्म की प्राप्ति होती है
 क) स्वर्ग लोक में जन्म की प्राप्ति होती है
 ड) व्यक्ति को पुण्य की प्राप्ति होती है
- ४८१) योगाभ्यास का सच्चा उद्देश..... (६.४१)
- अ) भगवद्धाम लौटना तथा पुनः कभी कष्ट नहीं भोगना है
 ब) कृष्णभावनामृत की सर्वोच्च सिध्दी प्राप्त करो
 क) स्वर्ग लोक की प्राप्ति है
 ड) भगवान बनना है
- ४८२) यद्यपि कृष्णभावनामृत के लंबे अभ्यास के पश्चात यदि कोई असफल रहता है, तो वह योगियो के परिवार में जन्म प्राप्त करता है (६.४१)
- अ) सत्य ब) असत्य
- ४८३) ने अगले जन्म में अच्छे ब्राम्हण परिवार में जन्म से लेकर अपने भक्तिमय जीवन को परिपूर्ण बना लिया था (६.४३)
- अ) विदुर ब) महाराज रहुगण क) ययाति ड) महाराज भरत
- ४८४) एक वरिष्ठ/विकसित/आगे बढे हुए श्रेष्ठ योगी का लक्षण है..... (६.४४)
- अ) शास्त्रों के विधि विधानों से आसक्ति ब) भगवन्नाम का जप
 क) सभी शास्त्रों का अध्ययन संपन्न करना

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ड) सभी प्रकार के तपस्याओं एवं यज्ञों को संपन्न करना
- ४८५) श्री भगवान (श्री हरि) के पवित्र नाम के जाप करने के लिए (६.४४)
- अ) ब्राम्हण परिवार में जन्म होना चाहिए
- ब) सभी संस्कारों को पूर्ण करना चाहिए
- क) सभी प्रकार की तपस्या करना ,
- ड) किसी भी योग्यता की आवश्यकता नहीं.
- ४८६) ने मुस्लिम परिवार में जन्म लेकर , श्रीचैतन्य महाप्रभु द्वारा 'नामाचार्य' की उपाधि प्राप्त की (६.४४)
- अ) ठाकुर हरिदास ब) श्रीवास ठाकुर क)गदाधर पंडित ड)सार्भभौम भट्टाचार्य
- ४८७) और जब योगी स्वयं को.....में संलग्न करता है, और प्रगति कर , सभी कर्मों से शुद्ध होता है , वह अंत में , बहुत जन्मों के अभ्यास के पश्चात्, परम गति को प्राप्त करता है (६.४५)
- अ) कृष्ण भावनामृत ब) श्रद्धापूर्वक प्रयत्न क) यज्ञ एवं तपस्याएँ ड) पुण्यकर्म
- ४८८) उसके मन और इंद्रियों उसे इंद्रिय तृप्ति की ओर ले जाते हैं। (६.४४)
- अ) उन्हें शुद्ध करना चाहिए , कृष्ण की सेवा में संलग्न कर
- ब) इंद्रिय विषयों से दूर रहकर , शून्य पर ध्यान करना चाहिए
- क) ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए , जो उसे इंद्रिय तृप्ति की योजना बताए
- ड) लगे रहना चाहिए, यह आशा रखकर की एक दिन वह उन्हें छोड़ देगा
- ४८९) जब हम योग की बात करते हैं , तो हमके प्रति संदर्भ देते हैं। (६.४६)
- अ) अपनी चेतना को परम भगवान के साथ जोड़ने ब) श्वास क्रिया
- क) प्राणायाम करना ड) ब और क
- ४९०) यदि व्यक्ति कृष्ण के परमतत्त्व को स्वीकार कर ,उनके पास अपनी भौतिक कामनाओं की पूर्ति के लिए जाता है, तो उसे.....कहा जाता है (६.४७)
- अ) कर्मयोगी ब) ज्ञानयोगी क) अष्टांगयोगी ड) भक्तियोगी
- ४९१) व्यक्ति के परमतत्त्व को स्वीकार कर उन्हें जिज्ञासा से जानने का प्रयत्न करता है, उसे.....कहा जाएगा (६.४७)
- अ) कर्मयोगी ब) ज्ञानयोगी क)अष्टांग योगी ड) भक्तियोगी

भगवद्गीता प्रश्नावली

- ४९२) योग की कोई भी पद्धति बिना कृष्ण कीके अपूर्ण है। (६.४६)
 अ) शरणागति ब) ज्ञान क) वर मांगने ड) ऊपर के सभी
- ४९३) भजन.....के लिए किया जाता है। (६.४७)
 अ) भगवान श्रीकृष्ण ब) महादेव शिव
 क) जो व्यक्ति अपने आप भगवान बतलाते हैं ड) महाजन
- ४९४) भजन क्रिया मेंसम्मिलित है। (६.४७)
 अ) प्रेममयी सेवा ब) श्रद्धामयी सेवा क) पुण्यकर्म ड) दोनों
- ४९५) भगवद्गीता के किस रूप/टिप्पणियों को प्रामाणिक माना जाता है (६.४७)
 अ) श्लोको पर आधार शब्दों को तोड़मोड़कर कठिन बनाई हुई
 ब) लेखक के दृष्टिकोण से, न कि कृष्ण के
 क) नाम, प्रतिष्ठा एवं लाभ के लिए लिखी गई
 ड) भगवान के प्रति सेवा भाव से लिखित
- ४९६) योगसिद्धि की सही श्रेणी है (६.४७)
 अ) ज्ञानयोग – कर्मयोग – अष्टांगयोग – भक्तियोग
 ब) कर्मयोग – ज्ञानयोग – अष्टांगयोग – भक्तियोग
 क) अष्टांगयोग – कर्मयोग – ज्ञानयोग – भक्तियोग
 ड) भक्तियोग – कर्मयोग – अष्टांगयोग – ज्ञानयोग
- ४९७) सर्वश्रेष्ठ योगी वही है जो (६.४७)
 अ) पूर्ण रूप से मन को श्यामसुंदर पर ध्यान कराता है।
 ब) भगवान की देह से उत्पन्न प्रकाश पर ध्यान करता है।
 क) सभी आसनों में सिद्ध है ड) शास्त्रों में निपुण है ,
- ४९८) भक्ति अर्थात् श्री भगवान की भक्तिमय सेवा जो..... (६.४७)
 अ) कर्म एवं ज्ञान से रहित है ब) तपस्याओं से की जाती है
 क) ज्ञान के साथ की जाती है ड) भगवान से वरदान मांगकर की जाती है
- ४९९) भगवद्गीता के ६ वे अध्याय के अंतिम २ श्लोक की महानता को स्थापित करते हैं। (६.४७)
 अ) ज्ञानयोग ब) कर्मयोग क) भक्तियोग ड) मन का ध्यान

भगवद्गीता प्रश्नावली

उत्तर देने की पध्दती

अ.क्र.	अ	ब	क	ड	इ
१.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
२.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
३.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
४.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
५.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
६.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
७.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
८.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
९.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
१०.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
११.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
१२.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
१३.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
१४.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>
१५.	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>	<input type="radio"/>